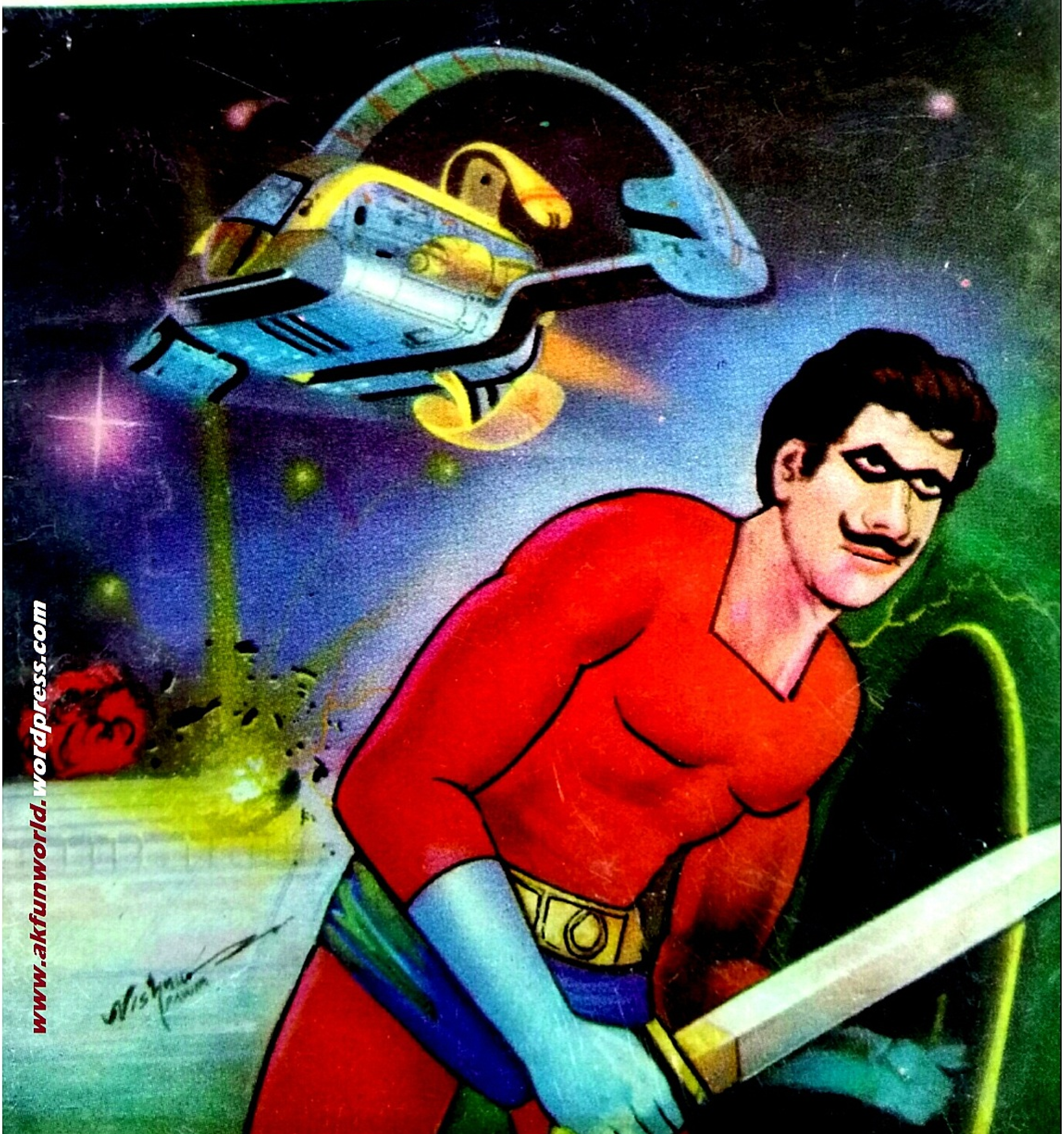
राजीव

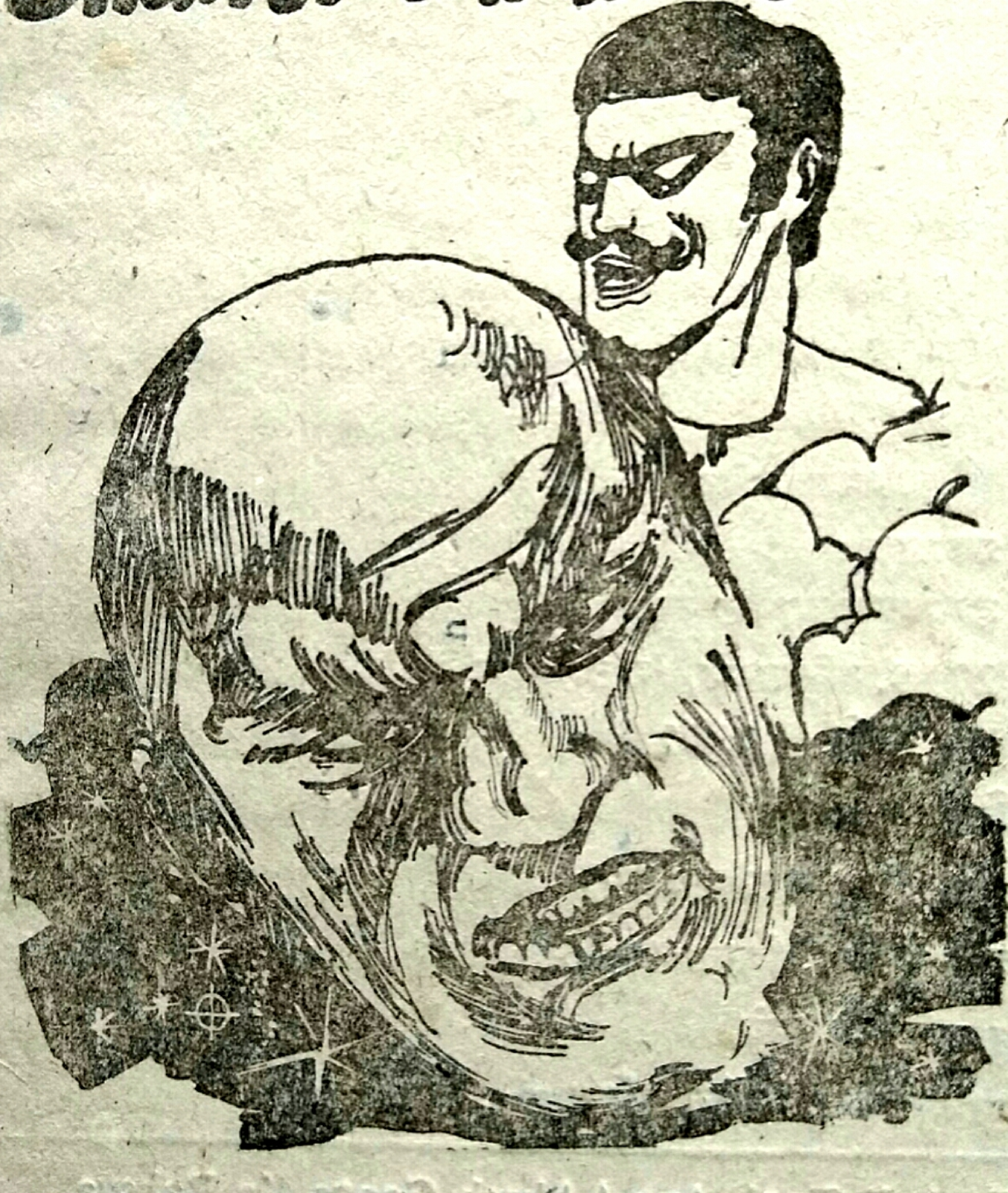
फौलादी सिंह और

आकाश गंगा का रहस्य



राजीव

फौलादी सिंह और आकाश गंगा का रहस्य



डाक्टर जॉन अपनी प्रयोगशाला में बैठे थे।

रात के दस बज रहे थे और वे प्रयोगशाला की बड़ी-सी खिड़की के सामने दूरबीन में आंखें गड़ाए आसमान की ओर देख रहे थे। उनकी आंखें विचारों से सिकुड़ी हुई थीं।

आकाश में अनगिनत तारे टिमटिमा रहे थे। डा० जॉन जानते थे कि यहां से देखने पर ये जो तारे छोटे-छोटे रूप में हर रात को आकाश में चमकते हैं, दरअसल इतने छोटे नहीं हैं। कई तारों के बारे में तो सिद्ध हो चुका था कि वे भी पृथ्वी के समान ग्रह हैं, कुछ तो पृथ्वी से भी बड़े हैं और कुछ पृथ्वी से छोटे हैं। मजेदार बात तो यह थी कि इस विशाल अन्तरिक्ष में और भी अनेक सूरज विद्यमान थे, जिनके इर्द-गिर्द कई ग्रह हमारे ब्रह्माण्ड की तरह परिक्रमा करते थे। विशाल अन्तरिक्ष में कितने सूरज हैं, कितने चन्द्रमा हैं, अथवा कितने ग्रह हैं इसकी खोज निरन्तर जारी है। वैज्ञानिकों का मत था कि आकाश में जहां पर अनेक तारों का विशाल समूह है, जिसे आकाश-गंगा कहा जाता है, वहां पर अनेक ग्रहों, सूरजों और चन्द्रमाओं के होने की सम्भावना है।

आजकल डा० जॉन का सारा ध्यान आकाश गंगा की ओर ही केन्द्रित था। रात के अन्धकार में एक जगह इतने सारे अनगिनत तारे इस कदर एकत्र हो गये थे कि लगता, जैसे सफेद-सफेद दूध की नहर बह रही हो—तभी तो इसे आकाश-गंगा कहा जाता

था। यहां से ये तारे एक-दूसरे से जुड़े और आसपास नजर आते थे, जबकि असलियत यह थी कि आसमान में वे एक-दूसरे से सैकड़ों और हजारों मील की दूरी पर स्थित थे।

डा० जॉन को पिछले कई दिनों से इन तारों में दिलचस्पी बढ़ गई थी। पिछले कई दिनों से उनके वीडियो की स्क्रीन पर अजीब से संकेत उभरते थे, जैसे अन्तरिक्ष से कोई ग्रह पृथ्वी की ओर संदेश भेजना चाहता हो। यों पृथ्वी से भी अन्तरिक्ष में फैले हुए अनेक ज्ञात-अज्ञात ग्रहों को सन्देश भेजे जाते थे, ताकि किसी ग्रह पर जीवों-प्राणियों का अस्तित्व हो तो वे भी जवाबी सन्देश भेजें। पहले तो डा० जॉन ने सोचा था कि उनके वीडियो सेट के स्क्रीन पर जो अजीब-गरीब सन्देश नजर आ रहे हैं, वे शायद पृथ्वी से ही भेजे जाने वाले संदेश हों, पर अगले पल उन्होंने यह विचार त्याग दिया, क्योंकि पृथ्वी से जो सन्देश प्रसारित किए जाते थे, उनसे वे परिचित थे, जबकि वीडियो सेट पर एकदम अलग प्रकार के संकेत उभरते थे, जिनकी लिपि अथवा सांकेतिक भाषा पृथ्वी से एकदम अलग थी। 'कैसे हैं ये सन्देश और संकेत ?' पहली बार ही वीडियो सेट पर इन्हें देखकर वे चौंके थे और फिर उन्हें लगा था कि कहीं ये सन्देश और संकेत अन्तरिक्ष के किसी ऐसे ग्रह से तो नहीं भेजे जा रहे, जहां हमारी तरह के जीवों और प्राणियों का अस्तित्व हो।

बस, यह ख्याल आते ही डा० जॉन अपनी खोज में जुट गए थे। वीडियो सेट के संकेतों से ऐसा लगता था कि ये सन्देश कहीं दूर…बहुत दूर से भेजे जा रहे हैं। पहले लगा था कि यह किसी आसपास के ग्रह से सन्देश आ रहे हैं, लेकिन इतने धूमिल और अस्पष्ट थे कि उन्हें यह समझते जरा भी देर न लगी कि ये किसी दूर के ऐसे ग्रह के सन्देश हैं, जिसके बारे में वैज्ञानिकों को

भी अभी पता नहीं।

'कौन-सा है यह ग्रह? किस ग्रह से आते हैं ये सन्देश ?'

डॉ० जॉन प्राय: अपने आपसे यह सवाल पूछते थे, पर इनका जवाब बहुत सोच-विचार करने के बाद भी नहीं मिल पाता था। वीडियो सेट के सन्देशों से उस ग्रह का अता-पता जानने की कोशिश की तो इसमें भी वे नाकामयाब हो गए। हां, इतना शक उन्हें जरूर हो गया था कि ये सन्देश आकाश-गंगा में स्थित किसी ग्रह के हो सकते हैं, पर आकाश-गंगा के क्षेत्र में अनगिनत तारे थे, इसलिए इस बात का पता लगना असम्भव ही था कि आखिर किस तारे से ये सन्देश आ रहे हैं।

इस बारे में फौलादीसिंह से भी उनकी बात हुई थी।

डा० जॉन ने कहा था—

'कई दिनों से मेरे वीडियो सेट पर बड़े अजीब-से सन्देश आ रहे हैं?'

'सन्देश? कैसे सन्देश, डा जॉन?' फौलादीसिंह ने पूछा।

'सन्देश बड़े अस्पष्ट हैं। न जाने किस ग्रह से कौन-सी भाषा में भेजे जा रहे हैं?'

फौलादीसिंह को आश्चर्य हुआ था। डा० जॉन के वीड़ियो सेट पर प्राय: अन्तरिक्ष में फैले हुए अनेक ग्रहों से सन्देश मिला करते थे। ये ऐसे ग्रह थे, जिनके बारे में सभी जानकारी मिल चुकी थी और डा० जॉन और फौलादीसिंह उन ग्रहों की यात्रा भी कर आये थे। उन ग्रहों की भाषा का भी उन्हें अच्छा ज्ञान हो गया था और वीडियो सेट पर सन्देश आते ही यह जल्दी पता चल जाता था कि सन्देश किस ग्रह से और क्यों भेजे जा रहे हैं। अचानक किसी नये ग्रह की अनजानी भाषा में अजीब सन्देशों की

बात सुनकर फौलादीसिंह हैरत में पड़ गया था।

फौलादीसिंह ने चौंककर कहा था—

'इन सन्देशों को देखकर आपको कैसा लगता है?'

'मुझे लगता है, किसी ग्रह पर कोई आपत्ति आ पड़ी है। यह ग्रह या तो किसी शत्रु ग्रह के हमले से आशंकित है या इसपर कोई प्राकृतिक मुसीबत आने वाली है।'

'यह अन्दाजा आपने कैसे लगा लिया?'

'सन्देशों के संकेत बड़ी जल्दी-जल्दी वीडियो सेट पर उभरते और गायब हो जाते हैं। कभी कांपती हुई सीधी लकीरें नजर आती हैं तो कभी आड़ी-टेढ़ी। लगता है, सन्देश भेजने वाला बहुत घबराया हुआ है और सहायता के लिए अन्तरिक्ष में फैले हुए ग्रहों को सन्देश भेज रहा है, पर लग रहा है कि उसे अब तक कोई सहायता नहीं मिली। पिछले पन्द्रह दिनों से सन्देश जल्दी-जल्दी और काफी देर तक लगातार भेजा जा रहा है।'

'ओह!' फौलादीसिंह बोला, 'यह तो बड़ी चिन्ता की बात है। आखिर कौन से ग्रह से सन्देश भेजे जा रहे हैं?'

'यही तो समझ में नहीं आ रहा है।' डा० जॉन गम्भीरता से बोले, 'यही पता चल जाता तो अब तक हम लोग उस ग्रह की ओर रवाना न हो जाते।'

'क्या एक बार मैं अन्तरिक्ष का चक्कर लगा आऊं? शायद इस ग्रह का मैं पता लगा सकूं?'

'कहां पता लगाओगे?' डा० जॉन चिन्ता के बावजूद मुस्करा कर बोले, 'अन्तरिक्ष में तो अरबों की संख्या में तारे फैले हुए हैं।'

'इन सन्देशों को वीडियो सेट पर देखकर आपको कुछ अंदाजा तो लगा होगा कि सन्देशों के आने की दिशा कौन-सी है?'

फौलादीसिंह बोला, 'बस, मैं उसी दिशा की ओर खोज-बीन करूंगा।'

'हां, कुछ अन्दाज तो लगा है।' डा० जॉन ने जवाब दिया, पर इससे भी कोई फायदा नहीं होगा। मुझे लग रहा है कि ये सन्देश आकाश-गंगा के किसी ग्रह से आते हैं। और तुम तो जानते हो कि आकाश-गंगा में सबसे ज्यादा तारों का समूह है। वहां भी तारों की खोजबीन करने के लिए एक नहीं, बल्कि कई जन्मों की जरूरत पड़ेगी। जब तक उस ग्रह का ठीक अन्दाज न लग जाये, तब तक अन्तरिक्ष में चक्कर लगाते रहना एकदम बेकार है।'

'इसका मतलब है कि हम मुसीबत में फंसे हुए ग्रह को अपने भाग्य पर छोड़ दें।'

'नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है। उस ग्रह के वासी बड़ी उम्मीद से ये सन्देश भेज रहे हैं। हम उनकी उम्मीदों पर इतनी आसानी से पानी नहीं फिरने देंगे।'

'पर हम क्या कर सकते हैं।'

'मैं रात-दिन दूरबीन लेकर अन्तरिक्ष की चौकसी कर रहा हूं।' डा० जॉन ने बताया, 'मुझे लगता है, यह ग्रह काफी उन्नत है। इस ग्रह में काफी वैज्ञानिक प्रगति हो चुकी है, तभी तो वहां से सन्देश भेजे जा रहे हैं। जिनके पास इतनी शक्तिशाली रेडियो-ट्रांसमीटर की प्रणाली है, वे अवश्य हमारी पृथ्वी से भी अधिक तरक्की कर चुके हैं। सन्देश तो हमारी पृथ्वी से भी अन्तरिक्ष के अनेक ग्रहों की ओर भेजे जा रहे हैं, पर हमारा रेडियो-ट्रांसमीटर इतना शक्तिशाली नहीं है कि इतनी दूर आकाश-गंगा में स्थित किसी ग्रह को अपने सन्देश भेज सके। जब यह ग्रह

इतना उन्नत है तो इनके यहां उन्नत किस्म के राकेट-यान भी होंगे। मुझे पूरा यकीन है कि सन्देश के साथ-साथ इन्होंने अपने राकेट यान भी छोड़ रखे होंगे। वे राकेट यान जरूर किसी ऐसे ग्रह की तलाश में होंगे, जहां से उन्हें मदद मिल सके। मैं अपनी दूरबीन के जरिये से किसी ऐसे ही राकेट-यान की तलाश में हूं। मेरी तलाश रात-दिन जारी है।'

'कोई सफलता मिली ?'

'अभी तो नहीं मिली, पर मुझे लगता है कि किसी दिन भी ऐसा राकेट-यान नजर आ सकता है।'

'मैं तो चाहता हूं कि जल्दी ही इस काम में आपको सफलता मिल जाए।' फौलादीसिंह बोला था, 'आखिर हमें भी तो पता चले कि किस ग्रह पर क्या संकट आया और हम उसकी क्या मदद [illegible] सकते हैं।'

'हां, मैं भी तो यही चाहता हूं।' डा० जॉन बोले, "अन्तरिक्ष में फैले ग्रह एक-दूसरे की मदद नहीं करेंगे तो और कौन करेगा। और फिर कल हमें भी तो मदद की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि संकट में फंसे ग्रह की मदद करें।'

उस दिन से फौलादीसिंह तो डा० जॉन की सफलता के लिए कामना करने ही लगा था। डा० जॉन भी पूरी तत्परता से दूरबीन लिए अपनी प्रयोगशाला की खिड़की के सामने हमेशा खड़ रहते थे।

इधर उनके वीडियो सेट पर सन्देशों के संकेत बहुत देर तक नजर आते थे। लगता था कि कोई उत्तर न पाकर ग्रह वाले घबरा गये थे और उतावली में देर-देर तक सन्देश भेजते रहते थे।

° °

रात का समय था।

चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था। वातावरण में खामोशी थी। डॉ॰ जॉन प्रयोगशाला में अकेले थे। उनकी आंखों से दूरबीन लगी हुई थी। वे ध्यान से अन्तरिक्ष के तारों का निरीक्षण कर रहे थे, बीच-बीच में उनकी निगाहें वीडियो सेट की ओर भी चली जाती थीं, जिसपर तेजी से अनजाने ग्रह के अनजाने सन्देश झलक दिखलाकर एक-एक पल के लिए खो जाते थे।

प्रयोगशाला की घड़ी में उस समय रात के बारह बज रहे थे। इतना समय होने के बावजूद डा॰जॉन की आंखों में नींद नहीं थी। वे पूरे होश-हवाश में उस ग्रह की दिशा जानने की कोशिश में लगे हुए थे, जो संकटग्रस्त था।

अन्तरिक्ष में लगातार ताकते-ताकते वे थक गए तो दूरबीन से निगाहें हटाकर वे वीडियो सेट की ओर देखने लगे। एकाएक वीडियो सेट पर सन्देश के अलावा तेजी से चमकता हुआ एक बिन्दु देखकर वे चौंक गए।

'अरे ! यह चमकीला बिन्दु कैसा ?'

डा॰ जॉन की जबान से यह अचानक ही निकल गया और वे गौर से वीडियो सेट पर आंखें गड़ाकर बैठ गये।

चमकीला बिन्दु लाल रंग का था। जैसे आग का गोला पहले तो वह छोटा-सा नजर आया, पर अचानक वह बड़ा होता गया, धीरे-धीरे उसका आकार विशाल होता गया और सारे वीडियो सेट पर फैल गया। वीडियो सेट की बड़ी-सी स्क्रीन लाल जलते हुए रंग से आलोकित हो गयी। लग रहा था, जैसे थोड़ी देर में ही वीडियो सेट पर आग लग जाएगी।

तभी उनके कानों में कहीं दूर से एक तेज गूंज आकर टकराने लगी।

'यह आवाज कैसी है ?'

डा० जॉन ने चौंककर सोचा और आंखों से दूरबीन लगाकर आकाश की ओर देखने लगे। इधर-उधर देखने के बाद उन्हें दिल्ली के पश्चिम इलाके में दूर नजफगढ़ के आसपास आकाश से आग का एक गोला नीचे आता हुआ नजर आया। वह गोला पृथ्वी की ओर आ रहा था। उसकी गति बहुत तेज थी और वह लुढ़कता हुआ कभी भी धरती से टकरा सकता था।

'यह क्या है ? यह आग का गोला कैसा है ?'

डा० जॉन एकटक उसी ओर देखते हुए सोच रहे थे। तभी उन्हें अहसास हुआ कि जिसे वे आग का गोला समझ रहे हैं वह आग का गोला नहीं, कोई राकेट यान भी हो सकता है।

'राकेट यान ?' उन्होंने सोचा, 'यह वही राकेट यान तो नहीं जिसकी मुझे तलाश थी। कहीं यह राकेट उसी संकटग्रस्त ग्रह से तो नहीं भेजा गया ? पर यह इतनी तेजी से पृथ्वी की ओर क्यों आ रहा है ? इस गति से तो वह धरती से धमाके के साथ टकरा जाएगा और चूर-चूर हो जाएगा। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह राकेट-यान दुर्घटना ग्रस्त होकर गिरने जा रहा है।'

एकाएक राकेट-यान काफी नीचे आ गया और नजरों से ओझल हो गया। तभी उन्हें दूर से एक हल्की-सी धमाके की आवाज सुनायी दी और इसी के साथ वीडियो सेट की स्क्रीन से जलता हुआ लाल प्रकाश भी गुम हो गया।

डा० जॉन समझ गए कि वीडियो सेट की स्क्रीन पर इसी गिरते हुए राकेट-यान की छाया उभरी थी और उसके धरती पर

गिरकर नष्ट होते ही वीडियो सेट के स्क्रीन से उसकी छाया भी गायब हो चुकी थी। हां, वीडियो सेट पर पहले की तरह संदेशों के संकेत अभी तक आ रहे थे—पहले से तेजी से और स्पष्ट।

डा० जॉन ने सोचा—तो मेरा अन्दाजा सही निकला। यह राकेट-यान जरूर सहायता पाने के लिए किसी उपयुक्त ग्रह की तलाश कर रहा होगा और पृथ्वी के निकट आते उसका सन्तुलन बिगड़ गया होगा और पृथ्वी से टकरा गया होगा। अब क्या करना चाहिए ?'

उन्होंने सोच-विचार में अपना वक्त बरबाद करना उचित नहीं समझा। वे नजफगढ़ के उस इलाके की ओर जाने के लिए तैयार हो गये, जहां राकेट-यान गिरा था।

वे तत्काल फोन की ओर बढे और फौलादीसिंह का नम्बर मिलाया। उस समय रात का एक बज रहा था।

उधर से फौलादीसिंह की आवाज आयी—

'हैलो ! कौन बोल रहा है ?'

डा० जॉन ने उतावली से उत्तर दिया—

'फौलादीसिंह, मैं बोल रहा हूं—डा० जॉन। सुनो, मेरा शक सही निकला। संकटग्रस्त ग्रह से जो राकेट-यान पृथ्वी की ओर आ रहा था, वह धरती पर गिर चुका है।'

'क्या ? यानी वे लोग हमें खोज निकालने में सफल हो गए ?'

'हां, पर मुझे लगता है, उनका राकेट-यान नष्ट हो चुका है, और अगर उसमें कोई प्राणी होगा तो वह जिन्दा नहीं बचा होगा, क्योंकि राकेट-यान बड़ी तेजी से धरती से टकराया था।'

'ओह ! यह तो बहुत बुरा हुआ।'

'हां, अब हमें बातों में ज्यादा वक्त बरबाद करना नहीं चाहिए। मैं नजफगढ़ जा रहा हूं। वहीं राकेट-यान गिरा है। वहां जाकर शायद हमें पता चल सके कि राकेट-यान कहां से आया था और उसका यहां आने का उद्देश्य क्या था ? तुम भी इसी वक्त नजफगढ़ के लिए रवाना हो जाओ।'

'ठीक है, मैं इसी वक्त वहां पहुंच रहा हूं।'

डा० जॉन ने फोन नीचे रख दिया और कार में सवार होकर नजफगढ़ की ओर चल पड़े।

दो

डा० जॉन जब उस जगह के पास पहुंचे जहां राकेट-यान गिरा था, तो वहां उन्हें थोड़ी-सी भीड़ नजर आयी।

राकेट-यान आबादी के इलाके से दूर सुनसान जगह पर गिरा था। वहां से कुछ दूर मजदूरों की बस्तियां थीं। राकेट धमाके के साथ नीचे गिरा था, इसलिए आवाज सुनकर कुछ लोग वहां पहुंच गए थे।

लोगों का विचार था कि कोई जहाज गिरा होगा। पर किसी की हिम्मत आगे बढ़ने की नहीं हुई थी। राकेट-यान का मलवा अब तक जल रहा था और उसमें से तेज रोशनियां निकल रही थीं। बस्ती के मजदूरों ने ऐसा जेहाज आज तक नहीं देखा था। वह साइज में छोटे-से हेलीकाप्टर की तरह था और गोलाकार था। सब लोग डर से काफी दूर खड़े थे।

तभी पुलिस की कुछ गाड़ियां पहुंच गई थीं। पुलिस ने जल्दी में जलते हुए राकेट-यान के चारों ओर घेरा डाल लिया था और उत्सुक भीड़ को आगे बढ़ने से रोक लिया था।

पुलिस के कुछ बड़े अधिकारी भी वहां पहुंच गए थे। उन्हें थोड़ी देर पहले ही 'राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला' से आदेश मिला था कि वे लोग यहां पहुंच जाएं और गिरे हुए राकेट यान के पास किसी को पहुंचने न दें।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक-शाला का आदेश पाते ही पुलिस यहां आ गई थी और राकेट-यान की विचित्र आकृति देखकर उन्हें मामला कुछ रहस्यमय प्रतीत हुआ था।

एक पुलिस का अफसर अपने साथी से बोला था—

'मुझे तो लगता है, यह किसी अन्य ग्रह का राकेट है। तभी तो 'राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला' हममें इतनी दिलचस्पी ले रही है।'

'शायद आपकी बात सही है। पर असलियत का पता तो तभी चलेगा, जब राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला के बड़े वैज्ञानिक यहां पहुंचेंगे। वे भी आने वाले होंगे।'

'मेरे ख्याल से डा० जॉन भी आ जाते तो बात बन जाती, उन्हें ऐसे विषयों की अच्छी जानकारी है।'

'राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला वालों ने उन्हें भी जरूर बुलवाया होगा।'

तभी डा० जान की कार वहां आकर रुकी थी।

पुलिस का अफसर उस कार को देखकर अपने साथी से बोला—

'देखो, शायद राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला के लोग आ पहुंचे।'

पर कार में से निकले डा० जान। वे तेज-तेज कदमों से चलते हुए पुलिस के अफसर के सामने जा पहुंचे।

डा० जान ने पूछा—

'आप लोगों को राकेट गिरने की सूचना कैसे मिली ?'

'डा० जान, हम लोग राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला के आदेश से यहां पहुंचे हैं।' पुलिस अफसर ने उत्तर दिया ?

'ओह, तो उन्हें भी सूचना मिल चुकी है।' डा० जान ने कहा, 'पर यहां तो शाला का कोई आदमी नजर नहीं आ रहा है।'

तभी राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला की बड़ी-सी एक वैन वहां आकर रुकी। उसमें से अनेक अंतरिक्ष वैज्ञानिक निकले। एकाएक उनमें एक वैज्ञानिक रमेश माथुर की नजर डा० जान की ओर चली गयी, जो पुलिस के अफसरों के पास खड़े थे। रमेश माथुर राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला के इंचार्ज थे। वे लम्बे-लम्बे कदम उठाते हुए डा० जान के पास पहुंचे और आश्चर्य से बोले—

'अरे, डा० जान ? आप ? आपको इस दुर्घटना का पता कैसे चला ?'

डा० जान ने मुस्करा कर उत्तर दिया—

'जिस गृह का यह राकेट है, वहां से मुझे फोन पर पहले ही सूचना मिल चुकी थी।'

'आप तो मजाक कर रहे हैं।' रमेश माथुर ने कहा, 'जरूर आपको पहले ही इस राकेट के बारे में पता होगा।'

'जी हां !' डा० जान ने गंभीर स्वर में कहा, 'मैं पिछले एक महीने से इस राकेट यान की खोज में था।'

'अच्छा ! लेकिन आपने हमें तो इसकी कोई खबर नहीं दी।' रमेश माथुर ने ताज्जुब से कहा।

मैं पहले खुद इस बारे में निश्चिन्त हो जाना चाहता था। दर असल, मुझे कई दिनों से शक था कि कोई राकेट यान बाहरी-गृह से हमारी पृथ्वी के आसपास चक्कर काट रहा है। मेरे वीडियो सेट पर कुछ अजीब से संदेश भी मिल रहे थे। ऐसा लगता था, कोई गृह संकटग्रस्त है और सहायता पाने के लिए किसी गृह की तलाश कर रहा था। इस तलाश में उन्हें हमारा गृह मिल गया था, पर हम तक पहुंचने से पहले ही उनका राकेट यान पृथ्वी से टकरा कर नष्ट हो चुका है।'

'ओह ! यह बात है ?' रमेश माथुर इस नई जानकारी से एकदम चकित रह गए।

रमेश माथुर की निगाहें राकेट यान की ओर उठ गईं। राकेट यान आग से पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था। मलवे से लाल-पीली चमकीली रोशनियां छिटक रही थीं। रमेश माथुर हाथ मलकर बोले—

'राकेट तो एकदम बरबाद हो चुका है। अगर सही-सलामत होता तो हम इनकी कुछ सहायता कर सकते थे। अब तो यह मालूम करना भी मुश्किल है कि आखिर यह राकेट आया कहां से था।'

'हां, यही अफसोस तो मुझे भी है।' डा० जान ने कहा ?

'अब क्या किया जाए ?' रमेश माथुर ने पूछा।

'अभी राकेट-यान के पास जाना खतरनाक हो सकता है ?' डा० जान ने राकेट के मलवे की ओर देखकर कहा, 'ये जो लाल-

पीली चमकीली रोशनियां छिटक रही हैं, वे खतरनाक भी हो सकती हैं।'

तभी फौलादीसिंह भी वहां पहुंच गया। वह बोला—

'डा० जान, मैं आ गया। मुझे क्या आदेश है?'

डा० जान खुशी से बोले—

'मुझे तुम्हारा ही इंतजार था। तुम्हारी पोशाक को ये लाल-पीली-चमकीली रोशनियां कोई खतरा नहीं पहुंचा सकतीं। तुम जरा राकेट यान के पास जाओ और देखो कि वहां हम लोगों का पहुंचना भी उचित है या नहीं।'

फौलादीसिंह बिना कुछ बोले राकेट यान की ओर बढ़ा।

चारों ओर लोगों की उत्सुक भीड़ खड़ी थी।

पुलिस के जवान, राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला के वैज्ञानिक तथा डा० जान फौलादीसिंह को आगे बढ़ते देख रहे थे।

चारों ओर रात का भयावह सन्नाटा छाया हुआ था। लोगों के बीचो-बीच राकेट यान का ध्वस्त मलवा पड़ा था। फौलादीसिंह निकट पहुंचा तो मलबे से निकलने वाली तेज रोशनियों की गर्मी चारों ओर फैली हुई थी। यान एकदम बरबाद हो चुका था। वह किसी चमकीले पदार्थ का बना हुआ। अब सामने लग रहा था, जैसे पीतल का गला हुआ ढेर पड़ा हो। फौलादीसिंह राकेट-यान की यह दशा देखकर मायूस हो गया। अगर राकेट यान थोड़ी भी सही हालत में होता तो वह खोज-बीन करके यह पता लगाने की अवश्य कोशिश करता कि यह राकेट-यान किस ग्रह से आया था। पर इस पीतल के पिघले हुए ढेर से यह पता करना

फिलहाल असंभव था। राकेट जहां गिरा था, वहां जमीन में गड्ढा बन गया था। आसपास झाड़ियां आग से झुलस गई थीं।

उसने गले हुए राकेट-यान के चारों ओर घूमकर निरीक्षण किया। कहीं से भी राकेट का कोई हिस्सा साबुत नहीं बचा था। अब यह टूटा-फूटा राकेट-यान राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला में पहुंचा दिया जाएगा और इसकी जांच-पड़ताल की जाएगी, पर फौलादी-सिंह को विश्वास था कि अब इस टूटे-फूटे यान से कुछ भी पता लगाना असंभव था।

फौलादीसिंह निराशा से वापस मुड़ा।

अभी वह दो कदम आगे बढ़ा ही था, थोड़ी दूर एक झुलसी हुई झाड़ी के पास एक विचित्र-सी आकृति को देख कर ठिठक गया। आकृति एक अजीब-से मानव की थी, जो बेहोश-सी जमीन पर पड़ी थी। चांद की हलकी रोशनी में उसका शरीर लाल रंग का था, उसने कपड़े भी लाल पहन रखे थे। उसके सिर के बाल भी लाल थे। चेहरा एक दम गोल था। वह कद में भी छोटा था—यही कोई तीन-साढ़े तीन फुट। उसका शरीर कोई हरकत नहीं कर रहा था।

'यह कौन है ?' फौलादीसिंह ने खुद से पूछा, 'ऐसा आदमी तो मैंने कभी नहीं देखा। कहीं ये राकेट-यान का यात्री तो नहीं ? शायद उसी संकटग्रस्त गृह का वासी होगा ?'

डा० जॉन ने फौलादीसिंह को ठिठकते हुए देख लिया था। वे फौलादीसिंह को राकेट-यान का निरीक्षण करके इतना जल्दी वापस आते देख कर वे समझ गए थे कि वहां फौलादीसिंह को कोई काम की चीज नहीं मिली थी—शायद राकेट-यान एकदम नष्ट हो चुका है। लेकिन राकेट से दो कदम की दूरी पर

फौलादीसिंह को ठिठकते देखकर जॉन की आंखों में आशा की किरणें कौंध गई।

दूर से फौलादी सिंह ने पुकारा—

'डा० जॉन, जल्दी आइए।'

डा० जॉन ने देर नहीं की। वे रमेश माथुर के साथ दौड़ते हुए फौलादीसिंह के निकट पहुंच गए।

'क्या बात है, फौलादीसिंह?' पास पहुंच कर डा० जॉन ने उत्सुकता से पूछा।

'ये देखिए।' फौलादीसिंह ने जली हुई झाड़ी के पास बेहोश पड़े हुए विचित्र प्राणी की ओर इशारा करते हुए कहा।

डा० जॉन ने चौंक कर झाड़ी की ओर देखा।

'अरे! यह तो कोई बेहोश आदमी है।' रमेश माथुर बोले, 'यह कैसे राकेट-यान की चपेट में आ गया?'

डा० जॉन ने बेहोश प्राणी के पास पहुंच कर उसे ठीक से देखा। फिर अफसोस के साथ बोला—

'यह हमारी पृथ्वी का आदमी नहीं।'

'तो?' रमेश माथुर ने चौंकते हुए पूछा।

'यह जरूर इस राकेट-यान का ड्राइवर होगा।'

'यह आप कैसे कहते हैं?' रमेश माथुर ने पूछा।

'देखते नहीं हैं, इसके शरीर की बनावट।' ऐसे लाल शरीर का आदमी हमारी पृथ्वी के किसी कोने में भी नहीं पाया जाता। यह अभागा उसी संकट-ग्रस्त गृह का वासी है और हमारी सहायता पाने यहां आया था।'

'इसे होश में लाना चाहिए, शायद कुछ पता चल सके।'

'कोई फायदा नहीं, रमेश माथुर।' डा० जान बोले, 'यह जिंदा नहीं। मैं तो पहली नजर में देखते ही समझ गया था कि इसके प्राण-पखेरू उड़ चुके हैं। मुझे तो लगता है कि राकेट-यान के धरती में टकराने से पूर्व ही यह खतरा भांप चुका था और धरती पर कूद पड़ा था। शायद धरती से यह बुरी तरह टकरा कर प्राण खो चुका है या यहां की जलवायु इसे माफिक नहीं आई होगी।'

फौलादीसिंह बोला—

'सच, मुझे तो इस दुर्घटना से बहुत दुख है। काश हम उस गृह की कोई मदद कर पाते।'

'चाहता तो मैं भी था, पर अब तो हम कुछ नहीं कर सकते।'

रमेश माथुर ने पूछा—

'राकेट यान के मलवे और इस प्राणी का अब क्या किया जाए?'

'करना क्या है?' डा० जॉन बोले, 'इस विचित्र प्राणी को तो इसी समय 'राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला' में ले जाइये। कल तक राकेट-यान का मलवा भी ठण्डा हो जाएगा, फिर उसे भी शाला में मंगवा लीजिएगा। वहीं पर मलवे का भली-भांति निरीक्षण हो सकेगा। शायद कोई काम की चीज मिल जाये। इसके अलावा इस विचित्र जीव की शारीरिक-संरचना का भी निरीक्षण किया जाएगा, शायद कोई सुराग मिल जाए कि यह किस गृह से आया था।'

'ठीक है।'

इतना कहकर रमेश माथुर अपने साथियों की ओर बढ़े और

डा० जान के कथनानुसार उस विचित्र प्राणी की लाश उठाकर वैन में रखने का आदेश दिया। फिर उन्होंने पुलिस के अधिकारी से कहा—

'राकेट-यान का मलवा उठाने कल सुबह हमारे आदमी आएंगे। कृपया रात भर मलबे की अच्छी तरह देखभाल करें। किसी को उसके निकट न जाने दें।'

'ऐसा ही होगा।' पुलिस अफसर ने उत्तर दिया।

इसी बीच शाला के कुछ लोग उस लाल प्राणी की लाश उठा लाए और वैन पर रख दी।

डा० जॉन निराश से खड़े थे। पास ही फौलादीसिंह भी मायूसी से खड़ा था।

रमेश माथुर पास आकर बोले—

'डा० जॉन, इजाजत दीजिए। हम लोग लाश लेकर 'शाला' जा रहे हैं। कल सुबह आप भी आ जाइयेगा, ताकि खोजबीन का काम आपकी मदद से पूरा हो सके।'

'मैं जरूर आऊंगा, डा० माथुर।'

इतना कहकर डा० जॉन ने निराशा से आसमान की ओर देखा। उनके दिमाग में बस एक ही बात काट रही थी कि अंतरिक्ष में आखिर कौन-सा ग्रह है, जहां संकट के बादल छाए हुए हैं। उस ग्रह ने इतने उमदा किस्म के राकेट-यान बना लिए हैं, वह अपने संदेश दूर-दूर के ग्रहों तक भेजने में भी कामयाब हो गया है, इतनी वैज्ञानिक तरक्की के बावजूद वहां कैसा संकट छा गया है। जिस प्रकार संदेशों के संकेत मिल रहे थे और जिस प्रकार इतना जोखिम उठाकर वह राकेट यहां तक पहुंचा था,

उससे साफ जाहिर था कि वहां जरूर कोई भयावह संकट आने वाला है। पर कौन-सा संकट ? और किस ग्रह पर ?

एकाएक उनके दिमाग में एक नया प्रश्न उभरा— क्या उस ग्रह से यही एक राकेट भेजा गया था। नहीं, इस राकेट के अलावा जरूर एकाध और भी राकेट अंतरिक्ष में मंडरा रहा होगा। उन राकेटों ने जरूर अपने इस राकेट का बुरा अंत देख लिया होगा और अपने साथी की दर्दनाक मौत भी। शायद वे सोच रहे होंगे कि पृथ्वी पर सुरक्षा-पूर्वक उतरना मुश्किल है, अपने एक साथी और राकेट का दुखद अन्त देखकर वे पृथ्वी पर उतरने का साहस नहीं कर रहे होंगे।'

डा० जॉन की खोजपूर्ण नजरें आसमान में चारों ओर चक्कर लगाने लगीं। पर आसमान में दूर-दूर तक कुछ नजर नहीं आया।

एकाएक उनकी राष्ट्रीय वैज्ञानिक शाला की वैन की ओर उठ गयी, जो वहां सेजाने की तैयारी कर रही थी। एकाएक डा० जॉन ने वैन के ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया और पुकारा—

'रमेश माथुर।'

वैन रुक गयी। रमेश माथुर वैन से निकलकर डा० जॉन के पास पहुंचे और बोले—

'फरमाइए, डा० जॉन ?'

'रमेश जी, आपकी वैन में कोई दूरबीन होगी ?' डा० जॉन ने उतावली से पूछा।

'आफकोर्स !' रमेश ने जवाब दिया, 'बहुत ही पावर-फुल

दूरबीन है। चाहिए ?'

'हां ! जल्दी दीजिए।'

रमेश माथुर ने वैन में से एक दूरबीन निकालकर डा० जॉन को सौंप दी। डा० जॉन ने दूरबीन का फोकस ठीक किया और दूरबीन से आंखें लगाकर अंतरिक्ष में देखने लगे। उनकी उत्सुक नजरें अंतरिक्ष में चारों ओर चक्कर काट रही थीं।

फौलादीसिंह और रमेश माथुर के अलावा वहां खड़े सभी लोग डा० जॉन को आश्चर्य से देख रहे थे। फौलादीसिंह को यकीन था कि डा० जॉन का यों अंतरिक्ष में दूरबीन लेकर देखना बिलावजह नहीं है।

डा० जॉन सबसे बेखबर एकटक अंतरिक्ष की ओर लगातार देखे जा रहे थे। एकाएक उन्हें प्रतीत हुआ कि बहुत दूर एक बड़ा-सा तारा कुछ कांपता हुआ खड़ा है। अचानक वह तारा बुरी तरह से हिला और ऊपर उठने लगा। धीरे-धीरे उसकी गति तेज होती चली गयी और वह अंतरिक्ष की ऊंचाइयों में भागने लगा। थोड़ी देर में ही वह एक धीरे-से बिंदु में परिवर्तित हो गया और अंतरिक्ष के विशाल मैदान में लुप्त होने लगा।

डा० जॉन ने दूरबीन से आंखें हटा लीं। उन्होंने दूरबीन रमेश माथुर को लौटा दी।

रमेश माथुर ने उत्सुकता से पूछा—

'आप क्या देख रहे थे, डा० जॉन ?'

डा० जॉन ने मुस्कराकर कहा—

'मैं जो देखना चाहता था, वह देख लिया। अब फौलादीसिंह का काम चालू होगा।'

फौलादीसिंह ने मुस्कराते हुए पूछा—

'यानी आपको कुछ सफलता मिल गयी है ?'

डा० जॉन बोले—

'हां फौलादीसिंह ! इस राकेट यान के साथ एक और राकेट यान आया था, जो अभी-अभी अंतरिक्ष की ऊंचाइयों में जाकर खो गया है। वह पश्चिम दिशा की ओर गया है। तुम उस राकेट यान का पीछा करो। और उस संकट-ग्रस्त ग्रह का पता लगाओ।'

'ठीक है, मैं अभी रवाना होता हूं।'

इतना कहकर फौलादीसिंह ने जैसे ही अपनी बेल्ट का बटन दबाना चाहा, वैसे ही पांवों के पास खड़ा हुआ लम्बू चीखकर बोला—

'अरे भैया, अपने लम्बू को कहां छोड़कर जाते हो। मुझे भी साथ ले चलो। कद में छोटा जरूर हूं, मगर मेरी मदद से तुम्हारा काम आसान हो जायेगा।

उसकी बात सुनकर सब हंस पड़े।

फौलादी बोले।

'आओ लम्बू ! तुम मेरी जेब में बैठ जाओ। भला तुम्हें छोड़कर मैं अकेले कैसे जा सकता हूं।

लम्बू फौलादीसिंह की टांगों से फुदकता हुआ फौलादीसिंह की जेब में जाकर दुबककर बैठ गया।

फौलादीसिंह ने बेल्ट का बटन दबा दिया। उसके शरीर का भार कम हो गया। वह एक झटके से उड़ता हुआ अंतरिक्ष की ओर बढ़ने लगा।

थोड़ी देर में ही रमेश माथुर अजनबी ग्रह के लालवासी की लाश के साथ अपने आदमियों सहित वैन में बैठकर चले गए। डा० जॉन कुछ क्षणों तक आकाश की ओर ताकते रहे। जब फौलादीसिंह आंखों से ओझल हो गया, तब वे भी अपनी कार में सवार होकर अपने घर की ओर रवाना हो गए।

वहां रह गए सिर्फ पुलिस के जवान, जो राकेट-यान के मलबे की निगरानी में तैनात थे।

तीन

फौलादीसिंह अनन्त आकाश में ऊपर-ही-ऊपर उड़ता चला जा रहा था। उसकी गति काफी तेज थी।

बहुत ऊपर एक बिन्दु के रूप में अजनबी ग्रह का राकेट-यान चमकता हुआ नजर आ रहा था। फौलादीसिंह की नजर उसी बिंदु पर थी। जरा भी आंखें भटक जाती तो बिन्दु नजरों से गायब हो सकता था। वह उस बिंदु को अपनी निगाहों से ओझल नहीं होने देना चाहता था। रात का समय था, इसलिए अन्य तारों की तरह वह राकेट-यान भी सूरज की रोशनी से चमक रहा था। दिन का समय होता तो वह भी तारों की भांति सहज ही नजर नहीं आता।

फौलादीसिंह का शरीर भार-विहीन था और वह बड़ी आसानी से आकाश की ऊंचाइयां पार करता जा रहा था। फौलादीसिंह को पता नहीं था कि कब जाकर वह राकेट-यान को

यह कहकर लम्बू जेब में पसरकर लेट गया। थोड़ी देर में ही उसे नींद ने दबोच लिया और वह आंखें बंद कर सो गया।

फौलादसिंह निरन्तर उड़ता रहा। उसे डर था कि सूरज का उजाला फैलते ही कहीं राकेट-यान आंखों से ओझल न हो जाए, इसलिए वह ज्यादा-से-ज्यादा तेज गति से उड़कर राकेट-यान के नजदीक पहुंचना चाहता था।

राकेट-यान की छोटी-सी आकृति पर उसकी नजरें बुरी तरह लगी हुई थीं। एकाएक फौलादीसिंह को लगा कि राकेट-यान एक ही जगह स्थिर हो गया है—पहले वह छोटा-सा चमकता बिंदु कांपता हुआ आगे बढ़ रहा था, मगर अब उसका कंपकंपाना या आगे बढ़ना रुक गया था।

फौलादीसिंह दुगने उत्साह से राकेट-यान की ओर उड़ने लगा। उसे शंका थी कि कहीं यान फिर से उड़ता हुआ आंखों से ओझल न हो जाये। उसके ओझल होने से पहले ही वह यान के ज़्यादा-से-ज्यादा निकट पहुंच जाना चाहता था। फिर चाहे सूरज भी निकल आए, फौलादीसिंह उसके पीछे-पीछे उड़ता हुआ ग्रह तक जा सकता था।

धीरे धीरे राकेट-यान और फौलादीसिंह की दूरी कम होने लगी। राकेट-यान सचमुच एक ही जगह स्थिर हो गया था, जैसे वह उड़ना भूल गया था।

'आखिर यह उड़ क्यों नहीं रहा है? क्या राकेट-यान में सवार लाल-निवासी मेरा ही इन्तजार कर रहे हैं?' फौलादीसिंह ने सोचा।

'कहीं ऐसा तो नहीं कि वे मुझसे डर गए हों और मुझे मार

जा पकड़ेगा या उस अजनबी ग्रह तक जा पहुंचेगा। अगर राकेट-यान थोड़ी देर के लिए रुक जाता तो वह बड़े आराम से उसे जाकर पकड़ सकता था। राकेट यान तो अत्यन्त तेज गति से अपने ग्रह को वापस भागा जा रहा था।

हो सकता है, राकेट-यान के लोगों ने उसे देख लिया हो और उसे दुश्मन समझकर उससे दूर भाग जाने का प्रयास कर रहे हों। अब फौलादीसिंह उन्हें कैसे समझाए कि वह उनका दुश्मन नहीं, दोस्त है, जो उनकी मदद करना चाहता है। पर दूसरे ग्रह वाले लोग पहली नजर में किसी पराए ग्रह के वासी पर जल्दी विश्वास नहीं कर पाते। विभिन्न ग्रह के वासी दूसरे ग्रह-वासियों को हमेशा पहले अपना दुश्मन ही मानते हैं।

राकेट-यान पहले की तरह उड़ा जा रहा था और फौलादीसिंह बराबर उसका पीछा कर रहा था। वह अपनी गति-यान के बराबर नहीं कर सकता था। फिर भी जितनी गति थी, उसी के बल पर वह यान का निरन्तर पीछा करता हुआ उनके ग्रह तक पहुंच सकता था।...उड़ते-उड़ते फौलादीसिंह को दो घण्टे हो चुके थे।

फौलादीसिंह की जेब में दुबका हुआ लम्बू बोला—

'कब तक उड़ते रहोगे, फौलादीसिंह' अब तो सुबह के तीन बजने को हो गए। मुझे तो प्यारी-प्यारी नींद आ रही है।'

'तुम सो जाओ, लम्बू मास्टर!' फौलादीसिंह ने मुस्कराकर कहा, 'जब हम उनके ग्रह तक पहुंच जाएंगे, तब मैं तुम्हें जगा दूंगा।'

'हां, यही ठीक है। मैं तो तुम्हारी जेब में आराम से सो रहा हूं।'

डालना चाहते हों।' यह विचार आते ही फौलादीसिंह कांप गया। अगर ऐसा हुआ तो फौलादीसिंह की लाश जेब में लम्बू मास्टर को बिठाए अनन्त-काल तक अन्तरिक्ष में लावारिस-सी चक्कर काटती रहेगी। उसे अपने मरने का इतना डर नहीं था, जितना इस बात की आशंका थी कि अगर उसे मार डाला गया तो वह अजनबी ग्रह की कोई मदद नहीं कर सकेगा। फौलादीसिंह दिल से उन लोगों की विपत्ति दूर करना चाहता था और यह तभी संभव था जब अजनबी ग्रह वाले उसे दुश्मन समझकर मार न डालें और दोस्त मानकर अपने पास आने दें।

इन आशंकाओं के बावजूद फौलादीसिंह लगातार उड़ता रहा। धीरे-धीरे राकेट-यान पास आता जा रहा था। फौलादीसिंह मन-ही-मन सोच रहा था कि जैसे ही वह राकेट-यान के नजदीक पहुंचेगा, वैसे ही अन्दर बैठे लाल-निवासी किसी घातक यंत्र से उसे मार डालेंगे। पर जैसे-जैसे दूरी कम होती जा रही थी, घातक-यंत्र का हमला अब तक नहीं हो रहा था।

'इसका मतलब है, वे मुझे मारना नहीं चाहते।' उसने सोचा, 'शायद वे लोग मेरा इन्तजार कर रहे हैं।'

लगभग आधे घण्टे की उड़ान के बाद वह यान के अत्यन्त निकट पहुंच गया। यान काफी बड़ा था—पृथ्वी के हैलीकाप्टर की भांति। वह चारों ओर ठोस पीतल जैसे पदार्थ का बना हुआ था—गोल आकार में। लग रहा था, जैसे पीतल का कोई बड़ा-सा गोल फुटबाल आकाश में स्थिर खड़ा हो। उसमें न कोई दरवाजा था और न ही कोई खिड़की।

फौलादीसिंह यान के निकट पहुंचकर उसके चारों ओर चक्कर काटने लगा। अभी उसने एक ही चक्कर काटा था कि

गोल-यान में एक जगह से अपने आप पीतल की दीवार से अंदर घुसने लायक दरार बन गयी । फौलादीसिंह ने दरार से अन्दर झांका, उसे कोई प्राणी तो नजर नहीं आया, पर अजीब-से यंत्रों का जाल जरूर नजर आया । फौलादीसिंह ने पहले सोचा कि अन्दर जाना उचित होगा या नहीं, फिर यह सोचकर कि यह दरवाजा उसी के लिए खोला गया है, वह एक छलांग लगाकर दरार से यान में कूद पड़ा ।

अन्दर जाते ही उसने बेल्ट का बटन आफ कर दिया और उसका उड़ना रुक गया । उसने आश्चर्य से चारों ओर देखा । यान की दरार बन्द हो चुकी थी । यान के अन्दर लाल रोशनी चमक रही थी । एक तरफ स्क्रीन लगी हुई थी, जिसमें यान के बाहर का चारों ओर का दृश्य साफ-साफ नजर आ रहा था । यान के चारों तरफ लाल-प्राणियों के आकार का ही मशीनी बुत खड़ा था, वह भी लाल रंग का था और एकदम उसी आकार-प्रकार का, जैसे पृथ्वी पर गिरे यान की यात्री की लाश का था । बुत धातु और यंत्रों का बना हुआ था और एक जगह स्थिर था ।

एकाएक फौलादीसिंह ने देखा—स्क्रीन के सामने एक छोटी-सी कुर्सी जरा-सी हिली । फिर कुर्सी से उठकर कोई उसकी तरफ आने लगा ।

आने वाला प्राणी ठीक उसी तरह का था, जिस तरह का फौलादीसिंह नीचे राकेट-यान के मलबे के पास देख चुका था—लाल रंग का तीन-साढ़े तीन फुट का प्राणी—लाल केश—गोल चेहरा—आंखें छोटी-छोटी ।

वह धीरे-धीरे चलता हुआ फौलादीसिंह के पास आकर रुक गया । वह गंभीर नजर आ रहा था ।

फौलादीसिंह ने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा । फौलादीसिंह

मुस्कराकर उसे बताना चाहता था कि 'मुझे अपना दोस्त ही समझो, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं।'

मगर लाल प्राणी ने उसकी मुस्कराहट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह घूरता हुआ फौलादीसिंह को देख रहा था। उसने चारों ओर घूमकर फौलादीसिंह का निरीक्षण किया।

फौलादीसिंह ने विनम्रता से कहा—

'मेरा नाम फौलादीसिंह है। मैं आपसे दोस्ती का हाथ मिलाने आया हूं।'

लाल-प्राणी ने गौर से फौलादीसिंह की बात सुनी, मगर उसे कुछ समझ में नहीं आया। उसने हाथ बढ़ाकर एकाएक उस यान्त्रिक-बुत के सिर पर लगे एक बटन को दबा दिया। बटन दबाते ही वह बुत हरकत में आ गया। उसने सिर झुकाकर लाल प्राणी की ओर देखा।

लाल प्राणी ने अपनी भाषा में उस बुत से कुछ बातें कीं। उसकी आवाज काफी महीन और पतली थी। जवाब में यान्त्रिक बुत ने सिर हिला दिया और फौलादीसिंह की ओर दो कदम बढ़ाकर रुक गया।

फौलादीसिंह के मुंह से अचानक निकला—

'अरे, यह तो चलता-फिरता भी है।'

अब बुत की जबान से हिन्दी भाषा में यह सुनायी दिया—

'मैं सिर्फ चलता-फिरता ही नहीं, किसी भाषा में बात भी कर सकता हूं। मैं यही तो जानना चाहता था कि तुम्हारी भाषा क्या है। अब मैं मजे से तुम्हारी भाषा में तुमसे बात कर सकता

हूं। मेरे 'बास' ने मुझे निर्देश दिया है कि मैं तुमसे पूछूं—तुम कौन हो—यहां क्यों आए हो—कहां से आए हो ?'

फौलादीसिंह को बड़ा विस्मय हुआ। इसका मतलब यह था कि इन लाल-प्राणियों ने विज्ञान में बहुत तरक्की कर ली है। ऐसे मानव-यंत्र भी बना लिए हैं, जो किसी ग्रह की कोई भाषा सुनकर वैसे ही बोल भी सकते हैं।

फौलादीसिंह बोला—

'मैं पृथ्वी से आया हूं, मैं आप लोगों का दोस्त हूं।'

यह उत्तर सुनकर यांत्रिक बुत ने लाल-प्राणी को अपनी भाषा में इसका अनुवाद सुना दिया। उत्तर सुनकर लाल-प्राणी के चेहरे की गम्भीरता कुछ कम हुई। वह अपनी भाषा में यांत्रिक बुत से कुछ कहने लगा।

अब यांत्रिक बुत ने फौलादीसिंह से कहा—'हम कई दिनों से पृथ्वी के आस-पास चक्कर काट रहे थे। पर पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण इतना तेज है कि उस पर हमारा यान धीरे से उतर नहीं सकता है। हमारे एक यान ने उतरने की कोशिश की तो वह पृथ्वी से टकरा गया। पता नहीं हमारे साथी का क्या हुआ ? क्या तुम कुछ हमारे साथी के बारे में जानते हो ?'

'जी हां।' फौलादीसिंह ने जवाब दिया, 'मुझे दुख है कि आपका साथी अब जिंदा नहीं।'

'ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ। पर तुम हमारे यान के पीछे कैसे आ गए। वो भी उड़ते हुए ?'

'हमारी पृथ्वी ने भी आपके गृह की तरह विज्ञान में काफ़ी तरक्की कर ली है। मेरी पोशाक में ऐसे यंत्र लगे हैं कि मेरा शरीर भार-विहीन हो जाता है और मैं आसानी से उड़ सकता हूं। आपके साथी का यान जैसे ही धरती पर गिरा, हमें इसकी

सूचना मिल गई थी। पर आपका वह यान पूरी तरह विनष्ट हो चुका था और आपका साथी भी मर चुका था। एकाएक हमारे एक महान वैज्ञानिक की नजर आपके इस राकेट-यान पर पड़ गयी। उन्होंने ही मुझे आदेश दिया था कि मैं इस राकेट यान का पीछा करूं। वे चाहते थे कि किसी भी तरह आपसे सम्बन्ध स्थापित हो जाये। वे पिछले कई दिनों से आप लोगों के बारे में जानना चाहते थे।'

'हम खुद पिछले कई महीनों से आपके गृह के निकट आने को उत्सुक थे। हमारे गृह को अपने यंत्रों से पहले ही यह पता चल चुका था कि पृथ्वी ने विज्ञान में काफी तरक्की कर ली है। पर हम अब तक पृथ्वी की खोज नहीं कर पाए थे। आज पृथ्वी के निकट पहुंचे भी तो एक राकेट के नष्ट होते ही हमें वापस जाने को मजबूर होना पड़ा। पर आप लोग क्यों हमसे सम्बन्ध बनाने को उत्सुक थे?'

'हमारे वैज्ञानिक डा० जान के वीडियो-स्क्रीन पर कई दिनों से किसी गृह के संदेश पहुंच रहे थे...।'

'हां-हां, वे संदेश हमारे ग्रह से ही भेजे जा रहे हैं। तो वे संदेश आप लोगों को मिलने लगे थे। पर आप लोगों ने कोई जवाब क्यों नहीं दिया? हम तो समझते थे कि हमारे संदेश कहीं पहुंच ही नहीं पा रहे हैं।'

'आपके संदेश तो हमें मिलने लगे थे, पर हमें यह पता नहीं चल पा रहा था कि ये संदेश किस ग्रह से आ रहे हैं। हां, हम लोग इस ग्रह के बारे में जानने को बेचैन जरूर थे।

'क्यों?'

'डा० जान का विचार था कि जिस ग्रह से ये संदेश आ रहे हैं, वह संकटग्रस्त है। डा० जॉन उस ग्रह की मदद करना चाहते थे।'

'सचमुच आपके डा० जॉन का विचार एकदम सही था। हमारे गृह पर इस वक्त संकट के बादल छाए हुए हैं, इसलिए हम मदद पाने को ये संदेश भेज रहे थे और खुद भी पृथ्वी-वासियों से सम्बन्ध बनाना चाहते थे।'

'और आज वह दिन आ पहुंचा। हमें तो जैसे ही आपका यह यान नजर आया, हमने ठान लिया कि आपसे जरूर मिलेंगे और हमसे जो बन सकेगा, जरूर मदद करेंगे।'

'आपने यहां आकर हम पर उपकार ही किया है, पर मुझे लगता है, अब हमारी मदद कोई नहीं कर सकता। हमारा अंत निकट आ गया है।'

'ऐसा क्यों कहते हैं। आखिर ऐसी कौन-सी मुसीबत आ पड़ी है कि आप इस कदर निराश हो गए हैं। जरा हमें भी तो बताइये; शायद हम आपकी कोई मदद कर सकें।'

'क्या फायदा ? और फिर तुम अकेले क्या कर सकोगे ?'

'जरूरत पड़ी तो पृथ्वी से कई लोग आपके ग्रह की ओर आ सकते हैं।'

'इसमें बहुत वक्त लग जाएगा और फिर मुसीबत ऐसी है, जिसका कोई समाधान नहीं।'

फौलादीसिंह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि सचमुच इनके गृह पर कोई भयंकर विपत्ति आने वाली है, अन्यथा विज्ञान में इतनी तरक्की करने के बावजूद वे इस कदर निराश नहीं हो जाते। उसने धीरे से कहा—

'अब जबकि मैं आपसे मिल चुका हूं तो कम-से-कम मुझे इतना तो बता ही दीजिए कि आपके ग्रह पर ऐसी कौन-सी मुसीबत आ गई है।'

'जानना ही चाहते हो तो हमारे गृह में चलो। हमारे गृह के सम्राट खुद तुमसे बात करेंगे। वे ही तुम्हें बताएंगे कि हमारे

ाल-गृह पर कैसी विपत्ति आने वाली है।'

'ठीक है, आप यान चालू कीजिए और अपने ग्रह की ओर लिए।'

लाल-प्राणी बिना कुछ बोले स्क्रीन के सामने पड़ी हुई अपनी र्सी की ओर बढ़ा। तभी फौलादीसिंह की जेब में सोया हुआ म्बू जगकर बोला—

'अरे, यह हम कहां पहुंच गए।'

फौलादीसिंह बोला—

'हम जिस यान का पीछा कर रहे थे, उसी यान में पहुंच गए। अब यान हमें अपने ग्रह की ओर ले जा रहा है?'

'यानी हमें सफलता मिल गई।'

'अभी पूरी नहीं मिली है। ग्रह में पहुंच कर जब हम अपने शन में कामयाब हो जाएंगे तभी हमें पूरी सफलता मिलेगी।'

लाल-प्राणी उनका वार्तालाप सुनकर पास आया और सुकता से पूछा—

यह तुम किससे बात कर रहे हो?'

'मेरे साथ मेरा साथी भी है।'

'साथी! पर मुझे तो नजर नहीं आ रहा है।'

लम्बू फौलादीसिंह की जेब से निकल कर उसके कंधे पर गया और बोला—

'लीजिए, अब तो मैं आपको नजर आ रहा हूं।'

'अरे!' लाल-प्राणी आश्चर्य से बोला, 'यह तो बहुत छोटा लाल ग्रह के निवासियों से भी छोटा।'

'मैं छोटा जरूर हूं, पर काम में खोटा नहीं। आपके ग्रह में कर ही मैं बताऊंगा कि काम में मैं किस तरह बड़ों-बड़ों के काटता हूं।'

लाल-प्राणी हंसकर बोला—

'वाह ! हमें ऐसे ही आदमियों की जरूरत है। अब लोग आराम से यान में बैठिए, मैं यान को अपने ग्रह की ओर चलता हूं।'

फौलादीसिंह यान के एक कोने में जाकर बैठ गया।

लाल-प्राणी स्क्रीन के सामने अपनी कुर्सी पर बैठ कर यंत्रों से छेड़-छाड़ करने लगा।

यान हलके-से झटके से अनजानी दिशा की ओर सर्रा भाग निकला।

चार

अगले चौबीस घंटों तक यान बिना रुके उड़ता रहा।

स्क्रीन पर अन्तरिक्ष का महाशून्य फैला हुआ था। कभी स्क्रीन पर कोई छोटा-बड़ा तारा नजर आ जाता था।

एकाएक स्क्रीन पर अनेक तारों के झुंड नजर आने लगे बड़ी तेजी से स्क्रीन पर उभरते और गायब हो जाते।

यांत्रिक-मानव ने लाल-प्राणी के आदेश पर फौलादीसिंह बताया—

'अब हम जिस इलाके से गुजर रहे हैं, उसे पृथ्वी-व आकाश-गंगा के नाम से जानते हैं। इस इलाके में अनगिनत और ग्रह हैं। पृथ्वी से देखने पर तो ये एकदम आपस में मिले- नजर आते हैं, हमारे यान की स्क्रीन पर भी ये आस-पास उभरे हुए नजर आते हैं, पर असल में ये इतने आस-पास हैं, ये एक-दूसरे से सैकड़ों किलोमीटर की दूरी पर स्थित

हमारा ग्रह आकाश-गंगा के बाद पड़ता है। हमारा अपना सूरज है, जिसके चारों ओर हमारा ग्रह चक्कर काटता है। हमारे ग्रह के अलावा इस सूरज के चारों ओर ग्रह हैं, पर उन पर किसी प्राणी का अस्तित्व नहीं है। हमारे ग्रह के दो उपग्रह हैं, जो हमारे ग्रह का चक्कर काटते हैं। आप पृथ्वीवासी अपने उपग्रह को चन्द्रमा कहते हैं, हम अपने दो चन्द्रमाओं को 'माईका' कहते हैं। अब हमारा ग्रह जल्दी ही आने वाला है।'

यह जानकारी पाकर फौलादीसिंह सतर्क होकर बैठ गया। उसकी नजरें स्क्रीन पर लगी हुई थीं।

थोड़ी देर में स्क्रीन पर एक लाल ग्रह उभरा, जो धीरे-धीरे पास आता जा रहा था। फौलादी को समझते देर नहीं लगी कि यही लाल-प्राणियों का ग्रह है। ग्रह बहुत बड़ा नहीं था, पृथ्वी से लगभग आधा था। ग्रह गोल था, लेकिन अण्डे के आकार का।

धीरे-धीरे लाल-ग्रह का आकार बढ़ता जा रहा था और फिर स्क्रीन पर ग्रह नजर आना बंद हो गया और उसकी जगह पर लाल-ग्रह की लाल धरती नजर आने लगी।

फौलादीसिंह को स्क्रीन पर यह लाल धरती ऐसी नजर आ रही थी, जैसे जमीन पर कोई लाल गलीचा बिछा दिया हो। चारों ओर लाल घास, लाल पेड़ और लाल मिट्टी फैली हुई थी।

यान नीचे उतरने की कोशिश कर रहा था। स्क्रीन के सामने बैठा लाल-प्राणी एक यंत्र को मुंह के सामने लगाए अपने ग्रह-वासियों से बात कर रहा था। उसने अपने अधिकारियों को यह भी बता दिया था कि उसके साथ पृथ्वी के दो निवासी भी आ रहे हैं—फौलादीसिंह और लम्बू।

यान की गति बहुत कम हो गई थी। अब वह धीरे-धीरे

नीचे उतर रहा था। फौलादीसिंह ने स्क्रीन पर देखा—
लाल चिकने मैदान पर यान धीमी गति से 'लैंडिंग' कर र
था।

एक हलके-से झटके के साथ यान धरती पर टिक गया
लाल-प्राणी ने यान के सारे यंत्र बंद कर दिए। अब वह कुर्सी
उठकर यान की दीवार के पास पहुंचा और एक बटन दबाया
दीवार में दरवाजा बन गया।

लाल-प्राणी ने यांत्रिक मानव से कुछ कहा। यांत्रिक मान
ने फौलादीसिंह से कहा—

'अब आप हमारे ग्रह पर हैं। कृपया यान से बाहर नि
लिए। हमारे ग्रह-वासी आपका दर्शन करना चाहते हैं।'

फौलादीसिंह और लम्बू उठकर लाल-प्राणी के पास पहुंचे
बाहर दरवाजे के साथ सीढ़ी लगी हुई थी। लाल-प्राणी के आका
और लिबास वाले कुछ लोग नीचे खड़े थे।

लाल-प्राणी सीढ़ी से नीचे उतरा। उसके पीछे-पीछे फौला
सिंह और लम्बू भी उतरे। लाल-ग्रह के वासी आदर औ
आश्चर्य के साथ फौलादीसिंह को देख रहे थे। फौलादीसिंह औ
लम्बू भी नए ग्रह के नए वासियों से मिलकर हैरानी महसूस क
रहे थे।

सुबह का समय था। सूरज थोड़ा-सा ही ऊपर उठा था
सूरज की रोशनी पृथ्वी की तरह तेज नहीं थी, बल्कि चारों ओ
सूरज की हलकी-सी लाल रोशनी फैली हुई थी। सारा वात
वरण लालिमा से नहा गया था।

जहां यान उतरा था, वह इस ग्रह का सबसे बड़ा एयरपो
था। यहीं से ग्रह के चारों ओर यान जाते थे और अन्य ग्रह
की ओर भी यहीं से यान छोड़े जाते थे। एक तरफ बड़ी-सी ला

इमारत बनी हुई थी। वहां से कुछ लोग उत्सुकता से इनकी ओर देख रहे थे।

लाल-प्राणियों ने आदर से झुककर फौलादीसिंह का स्वागत किया। लाल-प्राणियों के बीच ही एक यांत्रिक मानव भी खड़ा था। वह बोला—

'आपका लाल-ग्रह पर स्वागत है, फौलादीसिंह। हमारे सम्राट 'गालपो' आपका अपने महल में इन्तजार कर रहे हैं। चलिए...।'

सारे लाल-प्राणी, जो संख्या में कुल पांच थे, थोड़ी दूर पर खड़ी एक कार की ओर बढ़े। पर यह कार ऐसी नहीं थी, जैसी पृथ्वी पर पाई जाती है। इस कार में एक भी पहिया नहीं था, न ही कोई खिड़की या दरवाजा था। लाल-प्राणी कार के निकट पहुंचे। एक ने आगे बढ़कर कार के बाहर लगे एक बटन को दबाया—तत्काल एक दरवाजा बन गया। फौलादीसिंह अन्य लाल-प्राणियों के साथ कार में प्रविष्ट हो गया। अन्दर बैठने की सारी व्यवस्था थी। सब लोग बैठ गये।

एक लाल-प्राणी कार के सामने बैठ गया और यंत्रों को चलाकर कार स्टार्ट कर दी। बिना पहियों की कार चिकने मैदान पर तेज गति में तैरती हुई आगे बढ़ने लगी।

बाहर का दृश्य ड्राइवर के सामने एक स्क्रीन पर नजर आ रहा था। कार एयरपोर्ट के चिकने मैदान को पार करती हुई उस इलाके से बाहर निकल गई। अब कार शहर की सड़कों पर दौड़ रही थी।

शहर की सारी सड़कें लाल थीं। इन सड़कों पर इस कार की तरह और भी कई कारें चल रही थीं। पर लोगों की नजर जैसे ही इस कार पर पड़ती, वे अपनी कार रोक लेते और पहले इस कार को आगे बढ़ने की जगह दे देते। शायद यह सरकारी

कार थी, इसलिये लोग इसे अधिक महत्व दे रहे थे।

सड़क के किनारे पैदल चलने वालों के लिये अलग स्थान था, जिस पर अनेक लाल-प्राणी आ-जा रहे थे। शहर की इमारतें भी लाल रंग की थीं और कई इमारतें तो बहुत ऊंची-ऊंची थीं। सुबह का समय था, इसलिये सड़कों पर विशेष चहल-पहल थी। शायद लाल-ग्रह पर भी पृथ्वी की भांति सुबह होते ही जन-जीवन व्यस्त हो जाता था। लाल-ग्रह के स्त्री-पुरुष और बच्चे-बच्चियां अपने-अपने कार्यों में इधर से उधर आ-जा रहे थे। पर सबके चेहरों पर अजीब-सी चिन्ता की परछाइयां छाई हुई थीं।

मर्दों की अपेक्षा यहां की स्त्रियां छोटीं-छोटी गुड़ियां-सी प्रतीत होती थीं। उनका कद तीन फुट से अधिक नहीं लगता था। स्त्री-पुरुषों की पोशाक एक जैसी ही थी।

फौलादीसिंह ने एक बात गौर की—लाल-ग्रह के वासियों के चेहरों पर चिन्ता की रेखाएं स्पष्ट नजर आ रही थीं। प्रत्येक स्त्री-पुरुष घबराया हुआ था और सोचों में डूबा हुआ था।

'इसका मतलब यह है कि सारा ग्रह किसी बरबादी की आशंका से पीड़ित है।' फौलादीसिंह ने सोचा, 'आखिर क्या है इनकी आशंका ?'

एकाएक कार की स्क्रीन पर एक आलीशान इमारत उभर आई। अब कार शहर का इलाका छोड़कर उस विशाल इमारत की ओर बढ़ने लगी। फौलादीसिंह समझ गया कि यही इमारत यहां के सम्राट का महल है।

इमारत के मेन गेट के सामने लाल-ग्रह के सिपाही खड़े थे। उनके हाथों में कोई हथियार नहीं था। उन्होंने मेन गेट खोलने में एक पल की भी देर नहीं की। कार खुले हुए गेट में अन्दर घुस गई और एक जगह रुक गई।

कार का दरवाजा खोलकर सब बाहर निकले।

दो सिपाहियों ने आगे बढ़कर इन सबका स्वागत किया और अपने पीछे आने का संकेत किया।

आगे-आगे सिपाही चल रहे थे, उनके पीछे राकेट-यान का लालप्राणी और फौलादीसिंह था और उनके पीछे बाकी चार लाल-प्राणी।

कई गलियारों और मेहराबों को पार करते हुए सिपाही उन्हें एक बड़े-से हाल में ले गए।

हाल में एक सिरे पर एक ऊंचे से सिंहासन पर लाल-ग्रह के सम्राट 'गालपो' बैठे हुए थे। उसके आसपास कुछ सिपाही हाथ बांधे खड़े थे। हाल के दोनों किनारों पर कुछ दरबारी भी बैठे थे।

फौलादीसिंह के साथ लाल-प्राणियों ने झुककर सम्राट का अभिवादन किया। उनकी देखा-देखी फौलादीसिंह और लम्बू ने भी झुककर सम्राट का अभिवादन किया।

सम्राट ने आश्चर्य से फौलादीसिंह की ओर देखा और महीन स्वर में कुछ बोलने लगा।

सम्राट के बगल में ही यान्त्रिक-मानव खड़ा था। उसने सम्राट की बात को हिन्दी में कहना आरम्भ किया—

'लाल-ग्रह पर आपका स्वागत है, पृथ्वी-वासी। मुझे आपके बारे में सब कुछ बता दिया गया है। हम आपके डा० जान के भी आभारी हैं, जो हमारे लिये चिन्तित हैं। आप हमारी मदद करने आये हैं, यह जानकर हमें खुशी हुई है। मगर अब हमें कोई बचा नहीं सकता है। हमारा अन्त निश्चित है। बेहतर यही है कि आप पृथ्वी पर वापस चले जाएं। हम अपने साथ अपने पृथ्वी-वासी मेहमान को मरने नहीं देना चाहते।'

सम्राट की बात में जो दर्द छिपा हुआ था, उसे सुनकर फौलादीसिंह का दिल भर आया। सचमुच, यहां के लोग बहुत निराश हो गये थे। शायद उन्हें अपने बचने की उम्मीद नहीं थी।

फौलादीसिंह ने धीरे से कहा—

'यह क्या कह रहे हैं, सम्राट। आपके ग्रह को संकट में छोड़कर हम कैसे वापस जा सकते हैं।

'जी सम्राट, हम यहां चुपचाप वापस जाने के लिये नहीं आये हैं।' लम्बू फौलादीसिंह की जेब से झांकता हुआ बोला, 'हम आपकी मदद करने आये हैं।'

सम्राट हैरत से बोला—

'अरे, यह कौन बोला। मुझे तो आपके सिवा कोई और नजर नहीं आ रहा है।'

फौलादीसिंह ने बताया—

'यह मेरा साथी लम्बू है, जो मेरी जेब में बैठा है। कद में आधे फुट का है, पर बड़े काम का है।'

'अब आपने मेरी तारीफ सुन ली न, अब बताइये कि हमें क्या करना है।' लम्बू ने पूछा।

'हमने पृथ्वी के बारे में सुना है कि वहां बहुत वीर और बुद्धिमान लोगों का निवास है? आज आप दोनों को देखकर हमें विश्वास हो गया कि सचमुच पृथ्वी धन्य है।' सम्राट बोले, 'हम तो कई वर्षों से आपकी पृथ्वी की खोज में थे, पर पृथ्वी का पता हमें अभी कुछ महीने पहले ही चला? काश, आप लोगों के ग्रह की जानकारी हमें पहले ही मिल जाती तो आपकी मदद से हम जरूर बच पाते। लेकिन अब हालात हाथ से एकदम निकल चुके

हैं। यहां तो हमारा उन्नत विज्ञान भी कुछ नहीं कर पा रहा है, भला आप दो अकेले लोग क्या कर लेंगे ?'

'अगर जरूरत पड़ी तो पृथ्वी से और भी मदद ली जा सकती है।'

'इतना वक्त कहां है। मौत तो रोज-ब रोज करीब आती जा रही है।

'सम्राट।' फौलादीसिंह बोला, 'हताश होकर चुपचाप खुद को मौत के हवाले कर देना सरासर बुजदिली है। जबतक जान-में-जान है, तब तक निराश नहीं होना चाहिये। आखिर ऐसी कौन-सी मुसीबत है, जिस पर काबू नहीं पाया जा सकता।'

'मैं तुम्हारे हौसले की कद्र करता हूं। सम्राट ने जवाब दिया, 'हमारे भी हौंसले कम नहीं हैं, लेकिन इतनी कोशिशों के बावजूद जब हमें सफलता नहीं मिली तो निराश होना स्वाभाविक ही है।'

फौलादीसिंह बोला—

'आप मेहरबानी करके पहले मुझे लाल-ग्रह के संकट के बारे में बताइए।'

सम्राट एक पल चुप रहा। सारे दरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। सभी गहरी चिन्ता में खो गए थे। सबकी नजर अपने सम्राट की ओर लगी हुई थी।

एकाएक सम्राट ने धीरे-धीरे बोलना शुरु किया—हमारे लाल-ग्रह पर दो भयंकर मुसीबतें छायी हुई हैं—दोनों मुसीबतें प्राकृतिक हैं। हमारा ग्रह पृथ्वी से आधा है। यह अपने सूरज के चारों ओर नौ महीने में परिक्रमा लगाता है। हमारे यहां एक महीना पच्चीस दिनों का होता है और दिन और रात बीस घंटों का। बीस घंटों में लाल-ग्रह अपनी धुरी पर एक चक्कर पूरा कर लेता है। एक जमाना था, जब हमारा लाल-ग्रह बहुत ही

खुशहाल था। नौ महीनों तक लाल फसल और सब्जियां उगती थीं, हमारी धरती में खनिज पदार्थों का भी अमूल खजाना था—इन सबकी बदौलत लाल-ग्रह ने खूब तरक्की की और विज्ञान के क्षेत्र में अनेक ग्रहों से आगे बढ़ गया। हमारे ग्रह की किसी से दुश्मनी नहीं। हम अपने-आप में खुश और मस्त रहते हैं। पृथ्वी के बारे में सुना है कि वहां एक देश दूसरे देश से लड़ पड़ता है—युद्ध होते हैं—और लड़ने के लिए भयंकर-से-भयंकर अस्त्रों का निर्माण किया है। पर हमारे ग्रह पर आजतक अस्त्रों की जरूरत महसूस नहीं हुई। हमारे यहां जितने भी आविष्कार हुए हैं, वे लाल-ग्रह के वासियों की भलाई के लिए हुए हैं। नई-नई वैज्ञानिक खोजों के कारण हमारे ग्रह के सभी निवासियों का जीवन-स्तर भी ऊंचा हो गया है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से हमारे यहां एक नई मुसीबत पैदा हुई। यह पहली मुसीबत है, दूसरी मुसीबत के बारे में बाद में बताऊंगा, जो अधिक भयंकर है। मुसीबत यह है कि एक जमाना था, जब हमारे यहां की धरती हर महीने अच्छी-अच्छी लाल-फसलें उगाती थीं, नदियों में पानी भरा रहता था, हमारा लाल-समुद्र ऊंची-ऊंची लहरों के साथ खूब मचलता था। पर अब ? हालत यह है कि धरती ने फसलें उगानी बंद कर दी हैं, नदियों का पानी सूख चला है और लाल-समुद्र सूख चला है। हमारा ग्रह धीरे-धीरे लाल रेगिस्तान में बदलता जा रहा है।'

'ऐसा क्यों, सम्राट ?' फौलादीसिंह ने ताज्जुब से पूछा।

'बताता हूं।' सम्राट ने जवाब दिया, 'दरअसल हमारे यहां बरसात होनी बन्द हो गयी है। पहले तीन-चार महीने तक खूब बारिश होती थी, मगर अब वैज्ञानिक-कोशिशें करने के बावजूद मुश्किल से एकाध सप्ताह तक पानी बरसता है, वो भी थोड़ा-

सा।' बरसात न बरसने का मुख्य कारण यह है कि हमारे ग्रह के पश्चिमी हिस्से में जो आकाश को छूता हुआ विशाल पर्वत था, वह धीरे-धीरे नीचे बैठ गया है। सो अब समुद्र से जो पानी भाप बनकर ऊपर आ जाता है और बादल बनकर आगे बढ़ता है तो सामने कोई पहाड़ न मिलने की वजह से अंतरिक्ष में खो जाता है। इस प्रकार हर साल हमारे समुद्र का पानी बादल के रूप में अन्तरिक्ष में चला जाता है और हमारी धरती प्यासी रह जाती है। यह तो हमारे वैज्ञानिकों की सूझ-बूझ है कि बारिश के मौसम में जब बादल आसमान में एकत्र हो जाते हैं तो उन्हें वैज्ञानिक-उपकरणों की मदद से टकरा दिया जाता है और थोड़ी-बहुत बारिश हो जाती है, मगर ज्यादातर बादल तो बिना बरसे ही आकाश की अनन्त ऊंचाइयों में जाकर खो जाते हैं। और हमारी धरती की हालत यह है कि वह प्यासी-की-प्यासी रह जाती है। फसलों के अभाव में हम वैज्ञानिकों के बनाए हुए खाद्य-पदार्थ खाने को विवश हैं, पर जो मजा ताजा-ताजा लाल फसलों में है, वो मजा नकली खानों में कहां ? हमारी धरती धीरे-धीरे रेगिस्तान में बदलती जा रही है। पिछले दस वर्षों से यह तबाही जारी है और हमारी धरती का विशाल भू-भाग लाल रेगिस्तान के रूप में परिवर्तित हो चुका है। यह तो है हमारी पहली मुसीबत…।'

'और दूसरी मुसीबत ?' सम्राट को चुप होते देखकर फौलादीसिंह ने पूछा।

'दूसरी मुसीबत ?' सम्राट गंभीरता से बोले, 'दूसरी मुसीबत तो इतनी भयानक है, कि हमने पहली मुसीबत के बाद में सोचना ही छोड़ दिया है। जब हमारे दिन ही गिने-चुने रह गए हैं तो बारिश और रेगिस्तान के बारे में सोचकर फायदा ही

क्या ? अब तो ग्रह के विनष्ट होने का वक्त आ चुका है।

'यह क्या कह रहे हैं सम्राट ?' फौलादीसिंह बोला।

'मैं ठीक कह रहा हूं फौलादीसिंह !' सम्राट ने बताया; 'तुम तो जानते हो कि हमारा ग्रह आकाश-गंगा के निकट है और आकाश-गंगा में छोटे-बड़े ग्रह और तारे हैं। ये ग्रह और तारे अपने-अपने रास्ते पर निरन्तर परिक्रमा करते रहते हैं। हमें तो इनकी ओर से कभी भी किसी संकट के आने की कल्पना नहीं थी। पर पिछले दो वर्षों से आकाश-गंगा का एक विशाल तारा हमारी बरबादी करने को तैयार हो गया। वैसे तो अन्तरिक्ष में सभी तारे और ग्रह अपनी-अपनी जगह से कभी विचलित नहीं होते। लेकिन न जाने कैसे आकाश-गंगा का एक तारा अपनी जगह से विचलित हो गया है और पिछले दो वर्षों में हमारी धरती की ओर बढ़ रहा है। वह आकाश में अपनी पृथ्वी के उप-ग्रह चन्द्रमा से थोड़ा-सा छोटा है। अगर वह हमारे ग्रह से टकरा गया तो हमारा ग्रह नेस्तनाबूद हो जाएगा। अब तो यह हालत है कि यह तारा इतना नजदीक आ चुका है कि दस-पन्द्रह दिन में हमारे ग्रह से टकरा जाएगा और हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इतने बड़े तारे का धक्का हमारा ग्रह नहीं सह सकेगा। उसके टकराने के साथ ही हमारे ग्रह में भूकम्प आ जाएगा, धरती फट जाएगी। समुद्र का जो पानी बचा है वो जमीन पर फैल जाएगा, इस प्रकार सब-कुछ एक पल में समाप्त हो जाएगा। तो ये है हमारी मुसीबतें। अब तुम्हीं बताओ, कौन बचा सकता है हमें इन मुसीबतों से। अब तो हमने चुपचाप खुद को मौत के हवाले कर दिया है। गिरते हुए तारे को कोई रोक नहीं सकता...।'

फौलादीसिंह फिर चुप रहा। वह विचारों में खो गया था।

कुछ देर के बाद बोला—

'आपने इस संकट से बचने के लिए क्या-क्या प्रयास किया है?'

'हम पहले तो अपने ग्रह को रेगिस्तान होने से बचाना चाहते थे। बादलों को कृत्रिम पहाड़ों से टकराकर बरसात पैदा करना चाहते थे, पर अब यह प्रयास हमने छोड़ दिया है। जो तारा हमारे ग्रह से टकराने आ रहा है, उससे हमारा बच पाना मुश्किल है। जब हमारा बचना ही मुश्किल है तो ग्रह रेगिस्तान हो जाएगा या हरा भरा हुआ—हमारे लिए उसका कोई महत्व नहीं। हमारे वैज्ञानिकों ने तारे को ग्रह से न टकराने देने के बारे में बहुत विचार विमर्श किया है, पर इसका कोई हल अब तक नहीं निकल पाया है। वैसे भी इतने बड़े तारे को जो अंधाधुंध हमारे ग्रह पर गिरने वाला है—कैसे रोका जा सकता है। कोई छोटा-सा पत्थर का टुकड़ा तो है नहीं कि हाथ से पकड़कर दूसरी ओर फेंक दिया जाए।

'हूं! समस्या तो गंभीर है।' एकाएक फौलादीसिंह के मुंह से निकल गया।

'इसलिए तो मैंने कहा था कि आप अपनी पृथ्वी की ओर वापस चले जाइए। हमें हमारे हाल पर छोड़ दीजिए।'

फौलादीसिंह ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गहरे सोच में डूब गया था। उसकी जेब में चुपचाप बैठा लम्बू समझ गया कि फौलादीसिंह का दिमाग समस्या से निपटने के उपाय सोच रहा है। फौलादीसिंह जब भी गहरे सोच में डूब जाता था, तब कोई-न-कोई समाधान जरूर निकल आता था।

सभी लोग फौलादीसिंह को सोच-विचार में डूबता हुआ

देखते रहे। एकाएक फौलादीसिंह धीरे-से बोला—

'सम्राट ! मैं पृथ्वी पर वापस जाने के लिए यहां नहीं आया हूं। अगर हमारी कोशिश कामयाब रही तो लाल ग्रह विनष्ट होने से बच जाएगा। अगर असफल रहे तो मैं भी लाल-ग्रह के वासियों के साथ मर जाना उचित समझूंगा। आपने बताया कि तारे को ग्रह से टकराने में अभी पन्द्रह दिन लग जाएंगे। मैं कुछ दिन एकान्त में रहकर कोई उपाय सोचना चाहता हूं। कृपया मुझे अपने ग्रह में रहने की अनुमति दें।'

सम्राट ने कहा—

'जैसी तुम्हारी मर्जी फौलादीसिंह। हमें तुम्हारे ऊंचे खयालात सुनकर अपार प्रसन्नता हुई है। ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करेगा। तुम्हें जिस तरह की हमसे मदद चाहिए, वह मिलेगी।'

'फिलहाल तो मुझे एक कमरे में अकेला छोड़ दिया जाए, मैं कुछ सोचना चाहता हूं।'

'ठीक है।'

इतना कहकर सम्राट ने अपने दो सिपाहियों से कुछ कहा। दो सिपाही फौलादीसिंह को लेकर वहां से चले गए।

उसके चले जाने के बाद लाल ग्रह का सम्राट अपने दरबारियों के साथ विचार-विमर्श में लीन हो गया।

पांच

फौलादीसिंह को लम्बू के साथ एक छोटे-से आरामदायक कमरे में छोड़कर लाल ग्रह के सिपाही जा चुके थे।

कमरे में सभी सुख-सुविधा की चीजें रखी हुईं थीं। फौलादी-सिंह एक आरामकुर्सी पर पसरकर बैठ गया और विचारों में खो गया।

लम्बू उसे खामोश देखकर बोला—

'अब तुमसे कोई बात करना तो मुश्किल है। तुम्हारा दिमाग लाल ग्रह की समस्या में लगा हुआ है। मैं तो थका हुआ हूं, इसलिए सो रहा हूं।'

यह कहकर लम्बू एक पलंग पर नर्म से बिस्तर पर लेट गया और आंखें बन्दकर लीं।

फौलादीसिंह ने लम्बू की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह पहले की तरह आरामकुर्सी पर बैठा लाल-ग्रह के संकट पर गंभीरता से सोचने-विचारने लगा।

सचमुच लाल ग्रह पर बहुत बड़ा संकट आने वाला था। बेचारे लाल-ग्रह के निवासी पहले ही बारिश न होने की वजह से परेशान थे, उस पर अब तो आकाश-गंगा का एक विशाल तारा अपने मार्ग से भटककर उनके ग्रह पर गिरने वाला था। तारे के गिरते ही लाल-ग्रह निःसंदेह तहस-नहस हो जाएगा। इतने बड़े तारे का झटका सह पाना लाल-ग्रह के लिए नामुमकिन था।

फौलादीसिंह को समझ में नहीं आ रहा था कि इस भयानक संकट से लाल-ग्रह को कैसे उबारे? अगर फौलादीसिंह लाल-ग्रह को इस संकट से उबार नहीं सका तो वापस पृथ्वी पर भी नहीं जाएगा, लाल-ग्रह के निवासियों के साथ खुद भी मृत्यु का वरण करेगा।

एकाएक फौलादीसिंह की नजर कमरे की खिड़की की ओर चली गई। जहां से लाल-ग्रह का बाहर का दृश्य नजर आ रहा

था ।

लाल-ग्रह पर दोपहर हो चुकी थी । चारों ओर मद्धिम-सी लाल धूप खिली हुई थी । वातावरण में खामोशी छाई थी । दूर मैदानों में वर्षा के अभाव में लाल रेत के टीले साफ नजर आ रहे थे । सारा लाल-ग्रह इन भयानक विपत्तियों की चपेट में पड़कर सहम गया था ।

'इतने प्यारे ग्रह का यह दर्दनाक हाल !' फौलादीसिंह ने दुख से सोचा, 'इस ग्रह को नष्ट होने से अवश्य बचाना चाहिए । पर कैसे ?'

ः ः

धीरे-धीरे लाल-ग्रह पर शाम घिर आई । लाल सूरज अस्त होने लगा था और उसकी जगह दो लाल चन्द्रमा उग आये थे, जिनकी शीतल रोशनी से लाल-ग्रह नहा गया था ।

कमरे में अचानक लाल बत्तियां जल उठीं ।

लम्बू पलंग पर आराम से सोया हुआ था ।

फौलादीसिंह अभी तक चिन्तामग्न था । उसने समस्या से निपटने के लिए अनेक उपायों पर सोचा था, मगर कोई कारगर उपाय अब तक सामने नहीं आया था । उसके चेहरे पर चिन्ता की लकीरें छा गई थीं ।

एकाएक कुछ सोचकर वह सतर्क हो गया । उसके दिमाग में जो विचार आया था, अगर वह कामयाब हो गया तो लाल-ग्रह को संकट से उबारा जा सकता था, न सिर्फ तारे की टक्कर से लाल-ग्रह बच सकता था, बल्कि लाल-ग्रह को रेगिस्तान होने से भी रोका जा सकता था ।

उसकी आंखों में तेज रोशनी चमक गई और होठों पर सफलता की मुस्कराहट नाच उठी। वह आरामकुर्सी से उठा और दो कदम चलकर लम्बू के पास पहुंचा।

फौलादीसिंह ने लम्बू को झकझोर कर उठाते हुए कहा—

'लम्बू···लम्बू···जल्दी उठ बात बन गई।'

लम्बू हड़बड़ाकर पलंग से उठा। आंखें मलता हुआ घबराकर बोला—

'क्या हुआ? आकाश-गंगा का तारा आ पहुंचा क्या?'

'अरे नहीं।' फौलादीसिंह बोला, 'अब वह लाल-ग्रह का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।'

'क्या मतलब?'

'मतलब यह कि मेरे दिमाग में फर्स्ट क्लास आइडिया आया है। अगर उसके अनुसार काम किया जाए तो तारे की टक्कर से भी लाल-ग्रह को बचाया जा सकता है और बारिश की समस्या भी हल हो सकती है।'

'वो कैसे?'

'यह तुम समय आने पर खुद ही समझ जाओगे।' फौलादीसिंह ने जवाब दिया, 'चलो, सम्राट के पास चलें।'

वे अभी कमरे से बाहर निकले भी नहीं थे कि अचानक कमरे में एक यान्त्रिक लाल प्राणी ने प्रवेश किया।

वह बोला—

'लगता है, आपके दिमाग में कोई योजना बन चुकी है। चलिए, मैं आपको लेने आया हूं।'

'पर मशीनी भाई,' लम्बू हैरानी से बोला, 'तुम्हें कैसे पता

चला कि हम सम्राट के पास जाने वाले हैं।'

'मेरा मस्तिष्क आपके कमरे की सारी गतिविधियां देख-सुन रहा था।' यान्त्रिक प्राणी बोला, 'जैसे ही मैंने फौलादीसिंह की आंखों में चमक देखी, वैसे ही मैं सब कुछ समझ गया। जल्दी चलिए, हमारे सम्राट बहुत चिन्ताग्रस्त हैं।'

'चलिए।'

फौलादीसिंह बोला और लम्बू के साथ यान्त्रिक प्राणी के पीछे-पीछे चल पड़ा।

यान्त्रिक प्राणी अनेक गलियारों से चलता हुआ उन्हें दरबार की ओर ले जाने लगा।

सारे गलियारे लाल रोशनी से चमक रहे थे। बल्ब कहीं नजर नहीं आ रहा था, रोशनी दीवारों से छन-छनकर आ रही थी।

जल्दी ही वे लोग दरबार में पहुंच गये। दरबार में सम्राट सचमुच चिन्ताग्रस्त बैठे थे। अनेक दरबारी भी विचारों में लीन थे।

यान्त्रिक प्राणी ने लाल-ग्रह की भाषा में सम्राट से कुछ बातचीत की। सम्राट ने ध्यानपूर्वक यान्त्रिक प्राणी की बातें सुनीं। सम्राट के चेहरे पर से चिन्ता की रेखाएं दूर हो गयीं। वह अपनी भाषा में यान्त्रिक प्राणी को कुछ कहने लगा। फौलादीसिंह चुप था।

जवाब में यान्त्रिक प्राणी फौलादीसिंह से बोला—

'मैंने सम्राट को बता दिया है कि आपने लाल-ग्रह को बचाने का कोई तरीका ढूंढ़ निकाला है। हमारे सम्राट इस बात से बहुत खुश हैं। वे जानना चाहते है कि आप लाल-ग्रह को कैसे बचाएंगे?'

'यह आप मुझपर छोड़ दीजिए।' फौलादीसिंह बोला, 'मेरा तरीका इतना कारगर साबित होगा कि न सिर्फ तारे की टक्कर से बचा जा सकता है, बल्कि लाल-ग्रह को रेगिस्तान होने से भी बचाया जा सकता है।

'यह तो बहुत ही बढ़िया बात है। इसका मतलब है हमारा लाल-ग्रह विपत्तियों से बच जाएगा। अब यह बताइए कि हमें क्या करना है।'

'मुझे सिर्फ अणु बम चाहिए।'

'अणु बम ? अणु बम क्या होता है।'

'यह युद्धों में सबसे मारक अस्त्र है।'

'हमने तो आपको पहले ही बताया था कि हमारे यहां युद्ध के अस्त्र-शस्त्र नहीं बनते।'

फौलादीसिंह एक पल को निराश हो गया। फिर एकाएक पूछा—

'आपके ग्रह में अणु शक्ति का तो प्रयोग होता है न ?'

'हां, हां, हम तो अपना सारा काम अणु-शक्ति से ही चलाते हैं हमारे राकेट यान, पृथ्वी पर चलने पर अन्य यान अणु-शक्ति से चलते हैं। हमारे ग्रह पर जितने कल-कारखाने हैं, वे सब भी अणु शक्ति से ही चलते हैं। घरों में रोशनी भी अणु-शक्ति से ही पहुंचायी जाती है। हमारे यहां यूरेनियम बहुत मिलता है और अणु शक्ति के विज्ञान में हमने बहुत तरक्की की है।'

'बस, फिर तो मेरा काम बन गया। आपके ग्रह में अणु-बम बनाने की सारी चीजें मौजूद हैं, आप सिर्फ अणु-बम बनाने की कला नहीं जानते। यह कला मैं आपके वैज्ञानिकों को समझा दूंगा। वे मेरे लिए एक शक्तिशाली अणु-बम बना देंगे।'

'ठीक है, आप अणु-बम बनाने की कला बताइए।'

फौलादीसिंह ने यान्त्रिक प्राणी को एक शक्तिशाली अणु-बम बनाने का पूरा तरीका बता दिया। यांत्रिक-प्राणी बोला—

'ऐसा बम बनाना तो हमारे लिए बाएं हाथ का खेल है। आपको कब तक चाहिए।'

'मुझे यह बम तारे के लाल-ग्रह पर टकराने से पहले ही चाहिए। अभी पन्द्रह दिन का समय हमारे पास है।'

'आपको यह बम आठ दिन बाद मिल जाएगा।'

फौलादीसिंह ने निश्चिन्तता से कहा—

'बस, अब मेरा असली मिशन आठ दिन के बाद ही आरम्भ होगा।'

०००

आठ दिन के बाद आकाश-गंगा का विशाल तारा लाल-ग्रह के काफी निकट पहुंच गया था। अब वह नंगी आंखों से नजर आ रहा था। लाल-ग्रह के वासी उसे देखते थे और अपनी मौत की कल्पना करके कांप जाते थे। अब सिर्फ सात दिन की ही जिन्दगी उनके पास थी।

हालांकि तारा गिरने से सात दिन पहले ही लाल-ग्रह में यह खबर प्रसारित कर दी गयी थी कि घबराने की कोई बात नहीं। अब तारा लाल ग्रह से नहीं टकराएगा। लाल-ग्रह के निवासी बच जाएंगे। पर यह आश्वासन सुनकर किसी को विश्वास नहीं होता था। तारा इतना निकट आ गया था कि उसका टकराना निश्चित था।

० ०

अब तारों के टकराने में सिर्फ दो दिन रह गये थे।

बम बनकर तैयार था।

फौलादीसिंह ने अब देर करना ठीक नहीं समझा। उसने लम्बू को अपनी जेब में डाला और एक हाथ में बम तथा दूसरे हाथ में कुछ आवश्यक यन्त्र लेकर अपनी बेल्ट का बटन दबाकर आकाश की ओर उड़ चला। उसकी मंजिल वही विशाल तारा थी।

तारा लाल-ग्रह के काफी निकट आ गया था। इतना निकट पहुंचकर उसके गिरने की गति भी बहुत तेज हो गई थी।

फौलादीसिंह उस तारे का विशाल आकार देखकर सचमुच डर गया। सोचा, अगर यह इसी रूप में लाल-ग्रह पर टकरा जाएगा तो लाल-ग्रह का निशान भी नहीं बचेगा। लाल-ग्रह के खरपच्चे उड़ जाएंगे और वह टुकड़े होकर अन्तरिक्ष में बिखर जाएगा—यह तारा भी टूट-फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। लेकिन अब जो योजना उसने बनाई थी, उससे लाल-ग्रह बरबाद होने से बच जाएगा।

फौलादीसिंह तेजी से विशाल तारे की ओर पहुंचा। उसने अपने एक हाथ में बम को काफी हिफाजत से पकड़ रखा था। अगर वह उसके हाथ से छूट गया तो जहां गिरेगा, वहीं तबाही मचा देगा।

फौलादीसिंह लम्बू के साथ लगभग सात घण्टे की उड़ान के बाद तारे पर जा उतरा। तारा बुरी तरह कंपकंपाता हुआ लुढ़ककर लाल-ग्रह की ओर बढ़ता जा रहा था। फौलादीसिंह ने देर करना उचित नहीं समझा। उसने जेब से लम्बू को बाहर निकाला

और उसे यन्त्र सौंपकर बोला—

'लम्बू, इन यन्त्रों की मदद से तारे में गड्ढा खोदो। गड्ढा जितना गहरा होगा, उतना ही अच्छा होगा। तुम कद और आकार में छोटे हो, खूब गहराई तक जाकर गड्ढा खोदो।'

इतना सुनते ही लम्बू अपने काम में लग गया। उसने यन्त्र तारे की जमीन पर रखा और गड्ढा खोदने लगा।

फौलादीसिंह हाथ में बम पकड़े चुपचाप एक जगह खड़ा था, यन्त्रों की मदद से धरती पर जल्दी ही गड्ढा खुद गया। लम्बू छोटा-सा ही तो था, इसलिए गड्ढे में घुसकर वह सुरंग को और भी गहरा करने लगा।

लगभग एक घण्टे में काफी लम्बी और गहरी सुरंग बनकर तैयार हो गई। फौलादीसिंह ने आवाज देकर लम्बू से कहा—

'लम्बू, बस, इतनी सुरंग काफी है। अब तुम बाहर निकल जाओ।'

लम्बू फुदकता हुआ थोड़ी देर में ही बाहर निकल गया।

फौलादीसिंह ने बम के साथ एक अलार्म-घड़ी लगा दी। यह तारा अब से आठ घण्टे बाद लाल-ग्रह पर गिरने वाला था। उसने साढ़े सात घण्टे के बाद का टाइम अलार्म-घड़ी में फिट कर दिया और बम लम्बू को देते हुए बोला—

'यह बम सुरंग में जाकर रख दो। इसके साथ जो घड़ी लगी है, उसमें जैसे ही शाम के साढ़े सात बजेंगे, वैसे ही तारे के लाल-ग्रह पर गिरने से आध घण्टे पहले ही बम फट जाएगा।'

'फिर क्या होगा ?'

'यह तुम अपनी आंखों से देख लेना।'

'लेकिन यह बम लाल-ग्रह के इतना निकट जाकर फूटा तो लाल-ग्रह कैसे बचेगा।' लम्बू ने अपनी आशंका व्यक्त की।

'अगर यह बम तारे में नहीं फिट किया गया तो यह तारा समूचा-का-समूचा लाल-ग्रह पर जाकर गिरेगा और तब लाल-ग्रह को कोई बचा नहीं सकता। हां, बम फटने से यह तारा कई हिस्सों में टूटकर गिरेगा, इससे इसका असर कम हो जाएगा।'

'लेकिन इस तारे को आकाश में ही क्यों नहीं नष्ट कर देते; इतना खतरा मोल लेने का क्या फायदा। कहीं ऐसा न हो कि हमारी मेहनत बेकार चली जाए।'

'पहले मैंने भी यही सोचा था कि तारे को आकाश में ही लाल-ग्रह से बहुत दूर विनष्ट कर देना चाहिए। पर तुम यह क्यों भूलते हो कि हमें लाल-ग्रह की बारिश की समस्या का भी समाधान करना है।'

'उसका समाधान कैसे होगा ?'

'वक्त आने पर देख लेना। अब तुम देर मत करो, चुपचाप बम को सुरंग में जाकर रख दो।'

लम्बू ने आगे कोई प्रश्न नहीं किया। उसे इस योजना में थोड़ा-बहुत शक जरूर था, मगर फौलादीसिंह पर भरोसा भी पूरा-पूरा था। लम्बू बम लेकर सुरंग के अन्दर चला गया और गहराई में बम रखकर ऊपर आ गया।

दोनों ने मिलकर सुरंग को मिट्टी से भर दिया और फिर वापस लाल-ग्रह की ओर लौट आए।

ः ः

आज शाम को आठ बजे विशाल तारा लाल-ग्रह पर गिरने

वाला था। उसका विशाल आकार पूरे लाल-ग्रह पर छा गया था। लाल-ग्रह के निवासी भयभीत होकर अपनी मौत की प्रतीक्षा कर रहे थे। सारे लाल-ग्रह पर मौत का सन्नाटा छा गया था।

बार-बार ख़बरें प्रसारित की जा रही थीं कि डरने की कोई बात नहीं, तारे से लाल-ग्रह को कोई नुकसान नहीं होगा, लेकिन लोग थे कि उन्हें तारे के रूप में अपनी मौत साफ नजर आ रही थी।

शाम को पांच बजे सारे लाल-ग्रह में यह हिदायत दे दी गई कि लोग अपने घरों में खामोश रहें, बाहर कोई नहीं निकले।

शाम होते-होते सारा लाल-ग्रह वीरान पड़ गया। कहीं भी कोई भी प्राणी नजर नहीं आ रहा था। सभी लोग अपने-अपने घर के दरवाजे-खिड़कियां बन्द करके उस महाकाल के क्षण का इन्तजार कर रहे थे।

° °

महल के दरबार में सम्राट अपने विश्वस्त दरबारियों के साथ बैठे थे। उनके साथ फौलादीसिंह और लम्बू भी थे। सबकी नजरें हाल की दीवार पर लगे एक विशाल स्क्रीन पर लगी हुई थीं, जिसपर आकाश-गंगा का महा तारा उभरा हुआ था और जो तेजी से ग्रह की धरती की ओर आ रहा था।

तारा इतना निकट आ गया था कि किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि लाल-ग्रह उसके झटके से बच सकेगा। सम्राट बार-बार आशंका और घबराहट से फौलादीसिंह की ओर देख रहे थे।

फौलादीसिंह ने मुस्कराकर धीरे-से कहा—

'सम्राट, घबराइए नहीं, मैं पृथ्वी से आपकी हिफाजत करने

आया हूं। मुझपर विश्वास कीजिए। मैंने जो उपाय किया है, उससे लाल-ग्रह पर कोई विपत्ति नहीं आ सकती। बल्कि मैंने तो तारे के लाल-ग्रह पर गिरने से फायदा ही उठाने की कोशिश की है।'

'फायदा ? फायदा कैसा ?'

'मैं चाहता तो तारे को ऊपर आकाश में ही विनष्ट कर देता, पर इससे लाल-ग्रह की दूसरी समस्या का समाधान नहीं हो पाता।'

'मैं तुम्हारी बात समझा नहीं। तारे को लाल-ग्रह के समीप नष्ट होने से हमारी समस्या का कैसे हल हो जाएगी।'

'आधे घण्टे में आप खुद ही जान जाएंगे सम्राट।'

सब चुप हो गये।

साढ़े सात बजने वाले ही थे। सबकी उत्सुक नजरें स्क्रीन की ओर उठी हुई थीं।

अभी तारा लाल-ग्रह से आधे मील की दूरी पर ही था कि तारे में भयंकर विस्फोट हुआ। तारा तीन विशाल खण्डों में विभाजित हो गया और उसके तीनों टुकड़े लाल-ग्रह की ओर गिरने लगे।

तारा लाल-ग्रह के उत्तरी भाग की ओर से नीचे की ओर आ रहा था। उसी भाग में किसी जमाने में विशाल पहाड़ियां थीं। अब तारा तीन खण्डों में विभाजित हो गया था। उसकी शक्ति भी क्षीण हो गई थी। तारे के तीनों बड़े-बड़े टुकड़े उत्तरी हिस्से की जमीन में जाकर जोर से टकराए और एक ही जगह पर गड़कर रह गये।

पल भर के लिए लाल-ग्रह की धरती जरा-सी कांपी और सब कुछ सामान्य हो गया।

दरबार में मौत-सी खामोशी छा गई थी।

एकाएक लोगों को रोना आया। सबने आश्चर्य से स्क्रीन पर देखा—लाल ग्रह के उत्तरी भाग में तीन शिखरों की ऊंची-सी विशाल पहाड़ी बन गई थी।

सम्राट की आंखों में आश्चर्य तैर गया।

फौलादीसिंह ने कहा—

'देखिए, सम्राट। जिस जगह पर पहले कभी पहाड़ियां होती थीं, वहां फिर से पहाड़ियां बन गई हैं। यह उसी तारे की मेहरबानी है कि लाल-ग्रह पर फिर से पहाड़ बन गये। अब बादल बिना बरसे अन्तरिक्ष में खो नहीं जाएंगे, वे इन पहाड़ों से टकराएंगे और लाल-ग्रह पर खूब बारिश होगी। आपका ग्रह रेगिस्तान होने से बच जाएगा।'

'ओह! फौलादीसिंह।' सम्राट खुशी से चीखकर बोले, 'तुमने तो लाल-ग्रह को खरीद लिया। हम तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलेंगे।'

'उपकार कैसा सम्राट,' फौलादीसिंह बोला, 'यह तो मेरा फर्ज था।'

'तुम धन्य हो फौलादीसिंह, तुम्हारी पृथ्वी भी धन्य है।'

'सम्राट, अब आपका काम हो गया। अब हमें इजाजत दीजिए। डा० जॉन इस मिशन की कामयाबी के बारे में जानने के लिए पृथ्वी पर बेचैन होंगे।'

'हम इतनी जल्दी तुम्हें जाने नहीं देंगे। लाल-ग्रह के वासी अपने उस रक्षक का दर्शन किये बिना कैसे रह सकते हैं, जिसने उनकी जानें बचाई है।'

ः ः

सारे लाल-ग्रह में यह सूचना फैल गई कि उनका ग्रह विनष्ट

होने से बच गया है। जो तारा लाल ग्रह को बरबाद करने आ रहा था, अब उसी तारे की बदौलत लाल-ग्रह में पहले की तरह बारिश होगी और सारा ग्रह लाल हरा-भरा हो जाएगा। और यह सब करिश्मा करने वाला है पृथ्वी का फौलादीसिंह।

फौलादीसिंह को महल के बुर्ज पर खड़ा कर दिया गया। उसका दर्शन करने सारा लाल-ग्रह महल की ओर उमड़ पड़ा था।

फौलादीसिंह ने हाथ हिलाकर लाल-ग्रह निवासियों का अभिवादन किया। लाल निवासी अपनी भाषा में फौलादीसिंह की जय-जयकार कर रहे थे।

॰ ॰

अगले दिन बहुत ही भरे दिल से सम्राट ने फौलादीसिंह को विदा कर दिया।

फौलादीसिंह लम्बू के साथ पृथ्वी की ओर रवाना हो गया।

रवाना होने से पहले लाल-ग्रह से डा० जॉन को उसने सन्देश भेज दिया था, जो उनके वीडियो-स्क्रीन पर नजर आ गया था। सन्देश था।—

'डा० जॉन, मिशन कामयाब हो गया।

●●●

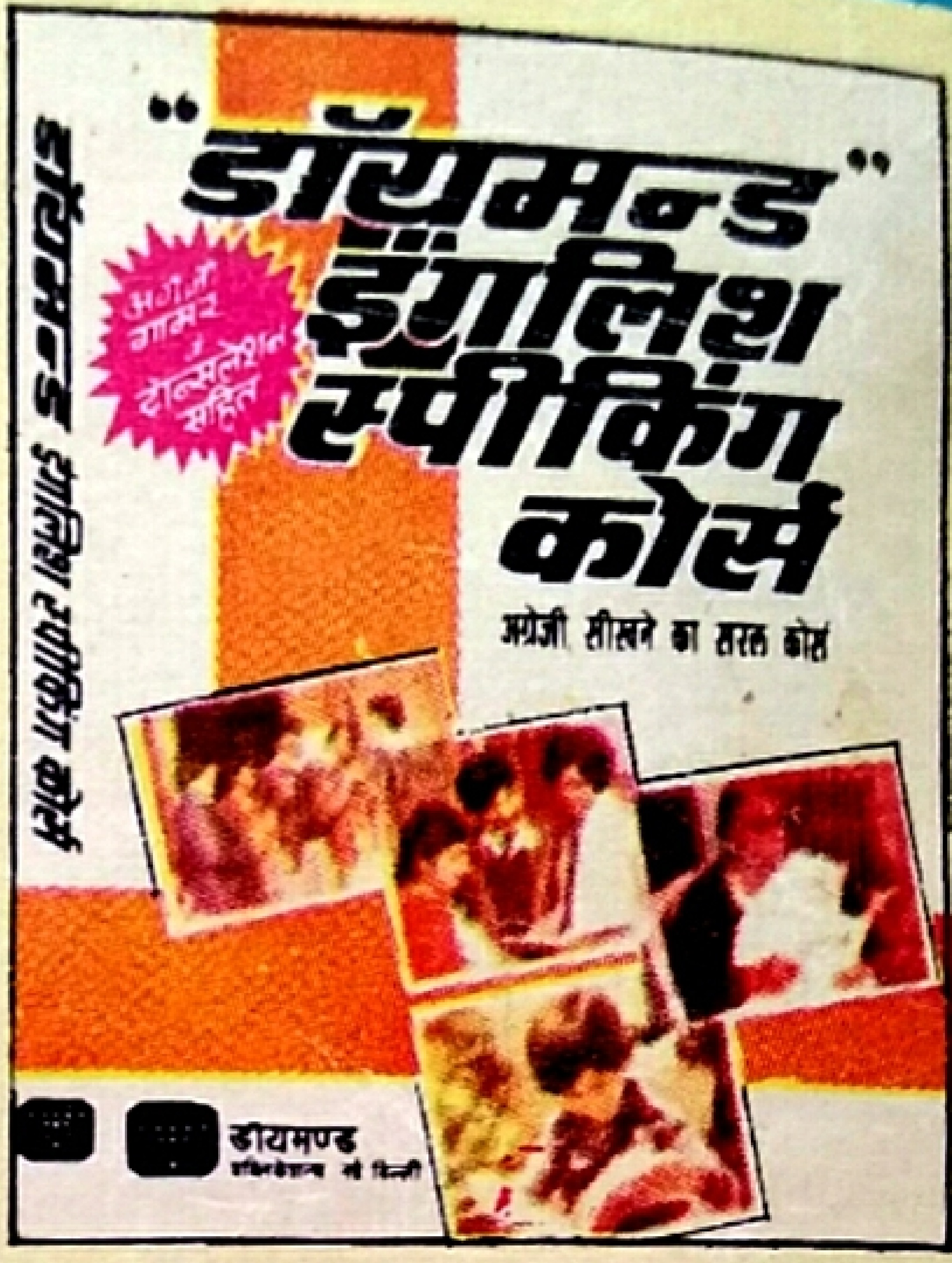
नन्हें मुन्ने पाठको, आशा है यह उपन्यास आपको पसन्द आया होगा, उपन्यास के सम्बन्ध में अपनी राय आप मुझे लिख भेजें, इससे मुझे आपकी पसन्द के अनुरूप उपन्यास लिखने की प्रेरणा मिलेगी। अपनी रुचि के विषय में भी मुझे लिखें जैसे तिलिस्मी, जासूसी, हास्य व्यंग, मारधाड़, कौतूहल आदि···

राजीव

257, दरीबा कलां

दिल्ली-110006

डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स



अंग्रेजी बोलचाल सिखाने वाली औरों से बिलकुल भिन्न प्रभावी पद्धति पर आधारित जो आपको कुछ प्रभावी शब्द और वाक्य नहीं रटाता बल्कि अंग्रेजी भाषा की गहरायी तक पहुंचकर आपको भाषा पर पूरा अधिकार करने की विशिष्ट क्षमता प्रदान करता है। अंग्रेजी भाषा के मर्म को गहराई से समझाने वाला एक ऐसा प्रभावी कोर्स जिसे अपनाकर आप महसूस करेंगे कि आपने वही पाया है जिसकी आपको वर्षों से तलाश थी।

5.00
एडवाँस
मनोआर्डर से भेजने
पर डाक व्यय
फ्री।

मूल्य : 21 रु.
5 रु. डाक-व्यय अलग

डायमंड पाकेट बुक्स

2715, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002